ISSN 2349-6614

जनवरी, 2019

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

जनता ने थामा 'हाथ'

राजस्थान, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ में कांग्रेस, तेलंगाना में टीआरएस और मिजोरम में फहराया एमएनएफ का झंडा

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 16 अंक 11 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

CHUNDA PALACE

MAJESTIC	INVITING	TRANQUIL
JOYFUL	MAGICAL	POETIC
SUBLIME	ETERNAL	INSPIRING

MUCH MORE THAN A HOTEL

1 Haridas Ji Ki Magri, Main Road,
Udaipur 313001, Rajasthan, India

Reservations: +91-294-2430251-252, 2430492
Facsimile: +91-294-2430889

E-mail: info@chundapalace.com
Website: www.chundapalace.com

नववर्ष की हार्दिक बधाई !

जनवरी
2019
वर्ष 16, अंक 11

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313001

अन्दर के पृष्ठों पर...

6 चुनाव : राजस्थान

फिर पलटी
जली रोटी

12 वास्तु

लाभ-शुभ से जुड़ा
हो रसोईघर

20 लोक आस्था

प्रयागराज में सिमटेगा
पूरा भारत

30 चुनाव मध्यप्रदेश

'कमल' का राज
खत्म, नाथ का शुरू

36 ज्योतिष

सफल दाम्पत्य
के लिए गुण-मिलान
ही काफी नहीं

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

Purohit Cafe

A South Indian Food Joint

N. K. Purohit

आपका विश्वास ही हमारी पहचान

वर्ष 1970 से 1980 तक दुबई में तथा 1981 से 1986 तक लंदन-अमेरिका में सफल सेवाओं के बाद अब 1987 से उदयपुर शहर में

(तीन दशक से आपके विश्वास पर खरा सिद्ध)

❊ कैफे में पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य देवें। ❊ आप व आपके परिवार की जायकेदार और लाजवाब पसंद, शुद्ध और स्वादिष्ट इडली, डोसा, मसाला और अन्य व्यंजन। ❊ सपरिवार बैठने की व्यवस्था। ❊ पूर्ण रूप से वातानुकूलित, शान्त एवं आरामदायक। ❊ सेवकों द्वारा विनम्र आवभगत।

"Anand Plaza" Nr. Ayad Bridge, University Road,
Udaipur (Raj.) 313 001 Ph. : 0294-2429635
Visit us : www.purohitcafe.com

दरक गए मज़बूत भगवा किले

तीन हिन्दी भाषी राज्यों मप्र, छत्तीसगढ़, राजस्थन व दक्षिण में तेलंगाना तथा पूर्वोत्तर में मिजोरम सहित पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में लगे झटके के बाद भाजपा अब चिंतन व समीक्षा के दौर में है। इस झटके का उसकी लोकसभा चुनावों की रणनीति पर भी व्यापक असर पड़ेगा। एनडीए के घटक दलों में शिवसेना व जद(यू) जैसे दल अब भाजपा पर दबाव बनाने की स्थिति में आ गए हैं। सामाजिक समीकरण प्रभावित करने वाले छोटे दलों की अहमियत भी बढ़ेगी। चुनाव बाद वाले भावी सहयोगियों के तेवर भी बदले नज़र आएंगे। बिहार में एनडीए में सीटों के बंटवारे में जद(यू) व लोजपा अब ज़्यादा मोलभाव के साथ बात करेंगे तो महाराष्ट्र में नरम-गरम तेवरों में शिवसेना के हौसले भी बुलंद हुए हैं। यूपी में सहयोगी दल भारत समाज पार्टी व अपना दल भी भाजपा को दबाव में लेने की भरपूर कोशिश करेंगे। पूर्वोत्तर को कांग्रेस मुक्त करके भाजपा ज़रूर कुछ राहत महसूस कर सकती है, किन्तु पांच महीने बाद ही होने वाला आम चुनाव-2019 उसके लिए आसान नहीं रहने वाला है।

पिछले लोकसभा चुनाव में जिन पांच बड़े राज्यों में भाजपा ने सबसे अच्छा प्रदर्शन किया था, उनमें हिन्दी भाषी बड़े प्रदेश राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ शामिल थे। इनके अलावा उत्तरप्रदेश और गुजरात थे। भाजपा अब सिर्फ यह सोचकर आगे नहीं बढ़ सकती कि नरेन्द्र मोदी की छवि के बूते ही चुनौती जीत ली जाएगी। हालांकि विधानसभाओं के चुनाव नतीजे लोकसभा की तस्वीर पेश नहीं करते, किन्तु महासमर में पांच माह से भी कम वक्त है, और वे मुद्दे अभी खत्म नहीं होने वाले हैं, जिन्होंने भाजपा के दमदार सियासी किलों को हाल ही में ढहाया है। चन्द्रबाबू नायडू के रूप में भाजपा अथवा एनडीए अपना एक महत्वपूर्ण सहयोगी भी खो चुकी है। इसलिए उसे गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए कि वह अब किन-किन दलों के साथ साझेदारी करके 2019 के महासमर में महागठबंधन का मुकाबला करने उतरेगी।

कर्नाटक चुनाव के बाद देश में जो नया राजनीतिक ध्रुवीकरण आरंभ हुआ, अब इन 5 राज्यों के चुनावों के बाद उस ध्रुवीकरण को और अधिक स्थिरता और मज़बूती मिलेगी। अब यह भी लगभग स्पष्ट हो जाता है कि 'महागठबन्धन' का नेतृत्व कांग्रेस के हाथों में रहेगा।

'वक्त है बदलाव का' के नारे ने तीनों हिन्दी भाषी राज्यों में कांग्रेस की धमाकेदार जीत को सुनिश्चित कर दिया। कांग्रेस ने भले ही इन चुनावों में मुख्यमंत्री के रूप में किसी चेहरे को प्रोजेक्ट नहीं किया लेकिन सबने मिलकर दर्प से तमतमाए केसरिया खेमे को निस्तेज कर दिया। मध्यप्रदेश में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ और चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष ज्योतिरादित्य सिंधिया की जोड़ी ने पूरे प्रदेश में ताबड़तोड़ सभाएं कर मुकाबले को काँटे का बना दिया। यहां भी राहुल गांधी की समझ काम कर गई। मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित कर यदि चुनाव लड़ा जाता तो संभव था कि भाजपा फिर से अपनी जीत की इबारत लिख चुकी होती। कांग्रेस ने यहां नेताओं में सन्तुलन रखते हुए किसानों के मुद्दे को ही सर्वोपरि रखा, नतीजा यह हुआ कि बहुमत तो ना मिला किन्तु वह जीत के करीब पहुंच गई।

छत्तीसगढ़ में विकास के दावे पर बदलाव का नारा भारी पड़ा। भाजपा अपने पन्द्रह साल की सरकार के खिलाफ लोगों के गुस्से का तोड़ नहीं निकाल सकी और न ही कांग्रेस के किसानों की कर्ज़ माफी और धान का समर्थन मूल्य 2500 रुपए क्विंटल, बकाया दो साल का बोनस और बिजली बिल आधा करने जैसे वादे का कोई विकल्प ही किसानों को दे पाई। पन्द्रह वर्ष तक सरकार के मुखिया रहे डॉ. रमन सिंह के चेहरे को ही सामने कर उनकी उपलब्धियों और विकास की गाथा गाकर वोट मांगे गए। मतदाताओं को लुभाने के लिए मोबाइल, टिफिन और कुकर बांटे गए, किसानों को धान का तीन साल का बोनस भी ऐन चुनाव के वक्त दिया, तेंदूपत्ता संग्रहण का बोनस भी बांटा लेकिन नौकरशाही की अकर्मण्यता और कांग्रेस के घोषणा पत्र के वादे ज्यादा असरकारी रहे।

राजस्थान में भी कांग्रेस ने मुख्यमंत्री का चेहरा उजागर किये बिना ही चुनाव लड़ा और सफलता हासिल की। राहुल गांधी इस बार अपनी ही रणनीति से काम कर रहे थे। जो कांग्रेस को एकजुट रखने में सफल हुई। 200 के सदन में कांग्रेस 100 सीटें लाकर बहुमत के नजदीक पहुंच पाई। अशोक गहलोत और सचिन पायलट ने वसुंधरा सरकार की कमियों और मंत्रियों के सातवें आसमान को छू रहे अहंकार की बखिया उधेड़ कर रख दी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि लचर कानून व्यवस्था और दफ्तरों में भ्रष्टाचार के जाल से जनता त्रस्त थी। रोजगार को लेकर युवा और उपज की लागत से भी कम मूल्य मिलने से किसान नाराज़ और परेशान थे। यदि टिकट वितरण में विलम्ब न होता और कुछ नेताओं की पसंद-नापसंद पर खींचतान न होती तो कांग्रेस 5-10 सीटें और जीत लेती। हालांकि जीते बागियों और निर्दलियों को सम्मोहित करना जादूगर को खूब आता है।

इस समूचे जनादेश का संकेत यही है कि अंधाधुंध शहरीकरण, औद्योगिकरण और बड़े उद्योग तथा पूंजीपति घरानों की ओर झुकी नीतियां कारगर नहीं है। ऐसा जनादेश पहली बार नहीं है। 2014 के आम चुनावों में भी मोदी के वादे किसानों को दोगुना दाम देने, साल में दो करोड़ रोजगार देने, भ्रष्टाचार को समूल नष्ट करने, काला धन वापस लेने और इन सबसे ऊपर 'अच्छे दिन' लाने के वादे ने भी एनडीए को भरपूर जनादेश दिया था। लेकिन वे उसका सम्मान अक्षुण्ण नहीं रख पाए और नोटबंदी, जीएसटी जैसे फैसले कर अपने को अलोकप्रिय बना लिया। अमित शाह के अहंकार ने रही सही कसर पूरी कर दी। अब कांग्रेस के सामने अपने वचन पत्र की क्रियान्विति की बड़ी और गंभीर चुनौती है, हालांकि किसानों के कर्ज माफी की घोषणा के साथ इस दिशा में काम शुरू किया जा चुका है।

फिर पलटी जली रोटी

बिना चेहरा घोषित किए मैदान में उतरने और टिकट वितरण में खींचतान के चलते हुए विलंब की वजह से कांग्रेस एकतरफा जीत से चूकी, लेकिन गहलोत-पायलट की मेहनत और राहुल के दौरों से सरकार बनाने लायक बहुमत हासिल करने में मिली सफलता।

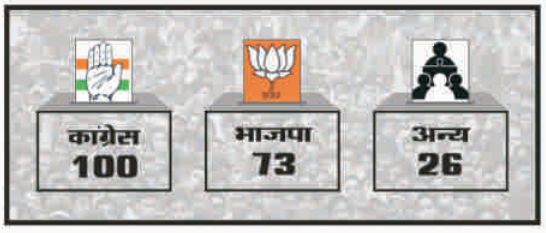

राजस्थान में पिछले पांच चुनावों से कांग्रेस और भाजपा के बीच सत्ता की अदला-बदली की रवायत इस बार भी बरकरार रही। मिशन 180+ के साथ दमखम से मैदान में उतरी भाजपा को बजाय जीत के हार मिली। चुनाव में कांग्रेस को 100 व भाजपा को 73 सीटों पर विजय मिली। जबकि 26 सीटों पर अन्य दलों के उम्मीदवार व निर्दलीयों ने बाजी मारी। पिछले चुनाव में जैसी हालत भाजपा ने कांग्रेस की खराब की वैसी तो नहीं लेकिन सत्ता के मद में चूर भाजपा को बड़ा झटका लगा। पिछली बार कांग्रेस की झोली में सिर्फ 21 सीटें थीं जबकि भाजपा के खाते में 163 सीटें। वसुंधरा सरकार के खिलाफ एंटीइनकमबेंसी के बावजूद भाजपा सम्मानजनक सीटें हासिल करने में कामयाब रही। भाजपा के इस प्रदर्शन की वजह पार्टी अध्यक्ष अमित शाह की रणनीति और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित स्टार प्रचारकों के धुआंधार प्रचार को माना जा रहा है। यदि मोदी-शाह ने प्रचार की कमान नहीं संभाली होती तो भाजपा की दुर्गति तय थी। आक्रामक चुनाव प्रचार के बूते वसुंधरा सरकार के खिलाफ एंटीइनकमबेंसी को स्थिर करने में कुछ सफलता मिली। पार्टी के रणनीतिकारों ने इसकी काट के तौर पर ध्रुवीकरण की कोशिश करते हुए अपनी पूरी ताकत झोंकी।

काम नहीं आया योगी का ज्ञान

मुस्लिम बहुल सीटों पर प्रचार के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को प्रचार में उतारा गया लेकिन वे कामयाब नहीं हो पाए। हालांकि ध्रुवीकरण की कोशिश कई सीटों पर कामयाब रही। जिन सीटों पर ध्रुवीकरण हुआ भी, वहां स्थानीय परिस्थितियों के चलते ऐसा हुआ। खुद भाजपा के नेता यह मानते हैं कि कई सीटों पर वहां के समीकरणों के चलते ध्रुवीकरण हर चुनाव में होता है। ध्रुवीकरण के लिहाज से हॉट सीट मानी जा रही जैसलमेर जिले की पोकरण सीट पर भाजपा को हार का मुंह देखना पड़ा। पार्टी ने यहां से बाड़मेर के नाथ संप्रदाय के तारातरा मठ के मुखिया प्रतापपुरी को मैदान में उतारा था जबकि कांग्रेस ने सिंधी मुस्लिम संत गाजी फकीर के बेटे सालेह मोहम्मद को उम्मीदवार बनाया। योगी आदित्यनाथ ने वहां सभा की फिर भी प्रताप नहीं जीत पाए। भाजपा आलाकमान को पहले से पता था कि प्रदेश में वसुंधरा सरकार के खिलाफ माहौल है, लेकिन वे इसकी काट नहीं ढूंढ पाए।

सिर्फ 7 मंत्री जीतने में कामयाब

सरकार से नाराजगी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सिर्फ सात मंत्री चुनाव जीतने में कामयाब रहे। इनमें गृह मंत्री गुलाब चंद कटारिया, पंचायती राज मंत्री राजेंद्र राठौड़, चिकित्सा मंत्री कालीचरण सर्राफ, उच्च

शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी, शिक्षा मंत्री वासुदेव देवनानी, महिला एवं बाल विकास मंत्री अनीता भदेल और ऊर्जा मंत्री पुष्पेंद्र सिंह राणावत का नाम मुख्य है। वहीं सार्वजनिक निर्माण व परिवहन मंत्री युनूस खान, सिंचाई मंत्री डॉ. रामप्रताप, वन व पर्यावरण मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर, सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक, उद्योग मंत्री राजपाल सिंह, सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री अरुण चतुर्वेदी, स्वायत्त शासन व नगरीय विकास मंत्री श्रीचंद्र कृपलानी, कृषि मंत्री प्रभु लाल सैनी, पर्यटन मंत्री कृष्णेंद्र कौर दीपा, राजस्व मंत्री अमराराम, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री बाबू लाल वर्मा व खान मंत्री सुरेंद्र पाल सिंह टीटी चुनाव हार गए। भाजपा की ओर से चुनाव हारने वालों में एक और बड़ा नाम अशोक परनामी का भी है जो लंबे समय तक प्रदेश में पार्टी के अध्यक्ष रहे।

मेवाड़-वागड़ के टूटे मिथक

इस चुनाव में सत्ता की अदला-बदली का क्रम तो जारी रहा लेकिन और भी मिथक टूटे। मसलन पिछले पांच चुनावों से सत्ता के सिंहासन तक वही पार्टी पहुंची जिसने मेवाड़-वागड़ में जीत हासिल की। 2013 के चुनाव में भाजपा ने यहां की 28 सीटों में से 25 पर फतह हासिल की थी। भाजपा ने इस बार भी बढ़त बनाई लेकिन उसकी सत्ता में वापसी नहीं हो पाई।

भाजपा ने पार्टी का गढ़ माने जाने वाले हाड़ौती में भी अपेक्षाकृत रूप से अच्छा प्रदर्शन किया। भाजपा ने यहां की 17 सीटों में से 10 सीटों पर फतह हासिल की। हालांकि 2013 में यहां से पार्टी को 16 सीटों पर जीत मिली थी। भाजपा को सबसे ज्यादा नुकसान पूर्वी राजस्थान, शेखावाटी और मारवाड़ में झेलना पड़ा है। भरतपुर, करौली और सवाई माधोपुर जिले में भाजपा को एक भी सीट नसीब नहीं हुई। भाजपा में 10 साल बाद डॉ. किरोड़ी लाल मीणा की घर वापसी के बाद यह माना जा रहा था कि पूर्वी राजस्थान में पार्टी की नैया पार लगाएंगे लेकिन उनकी पत्नी गोलमा देवी सपोटरा और भतीजे राजेंद्र मीणा महुआ से चुनाव हार गए। मीणा बहुल करौली, सवाई माधोपुर व दौसा जिलों से भाजपा का सूपड़ा साफ हो गया। जाट बहुल शेखावटी में भी भाजपा की हालत खस्ता रही। कांग्रेस ने यहां एकतरफा जीत हासिल की। सीकर, झुंझुनूं और चूरू जिले की कुछ सीटों पर ही भाजपा को बमुश्किल जीत हासिल हो पाई। भाजपा का गढ़ माने जाने वाले जयपुर जिले में पार्टी का प्रदर्शन उम्मीदों के अनुरूप नहीं रहा। 19 में से महज 6 सीटों पर उसे जीत नसीब हुई। मारवाड़ भी भाजपा को करारा झटका लगा। पार्टी को 29 में से महज 5 सीटों पर जीत हासिल हुई। कांग्रेस ने भाजपा को पटखनी तो दे दी लेकिन वह एकतरफा जीत हासिल करने से चूक गई।

समर्थकों में रस्साकशी

पार्टी ने चुनाव की रणभेरी बजने से पहले ही यह तय कर लिया था कि वह सामूहिक नेतृत्व के साथ मैदान में उतरेगी। राहुल गांधी के निर्देश पर पार्टी के नेता एक जुट जरूर नजर आए लेकिन मुख्यमंत्री पद के दावेदारों के समर्थकों के बीच खूब रस्साकशी हुई। कांग्रेस के टिकट वितरण में अशोक गहलोत, सचिन पायलट और रामेश्वर डूडी के बीच थोड़ी विचार भिन्नता जरूर रही। इन नेताओं ने परस्पर सम्मान और शालीनता से मतभेदों का तर्कों के आधार पर स्वत: निराकरण भी किया।

डूडी का हारना पार्टी को बड़ा आघात दे गया। बीकानेर पश्चिम से बीडी कल्ला जरूर जीत गए लेकिन पूर्व की सीट गवानी पड़ी। माना जा रहा है कि आपसी खींचतान के चलते कांग्रेस को 35 सीटों पर सीधी बगावत झेलनी पड़ी। यदि पार्टी टिकट वितरण से उपजे असंतोष को रोकने में कामयाब हो जाती तो पार्टी लगभग दो दर्जन सीटों पर और जीत दर्ज कर सकती थी। हालांकि पार्टी के आधा दर्जन बागी निर्दलीय चुनाव जीतने में कामयाब हुए हैं। इनमें बाबू लाल नागर, महादेव सिंह खंडेला, संयम लोढ़ा और आलोक बेनीवाल बड़े नाम हैं। कांग्रेस ने राजस्थान में फतह जरूर हासिल की लेकिन पार्टी के कई बड़े नेता चुनाव हार गए हैं। इनमें नेता प्रतिपक्ष रामेश्वर डूडी के अलावा डॉ. गिरिजा व्यास, दुर्रू मियां, वीरेंद्र बेनीवाल, डॉ. कर्ण सिंह यादव, हरिमोहन शर्मा व मांगीलाल गरासिया हैं। गिरिजा व्यास यूपीए सरकार में मंत्री रही हैं जबकि दुर्रू मियां, वीरेंद्र बेनीवाल, हरिमोहन शर्मा और मांगीलाल गरासिया प्रदेश सरकार में मंत्री रहे हैं। डॉ. कर्ण सिंह यादव अलवर से सांसद हैं।

तीसरे मोर्चे की संभावना ध्वस्त

इस चुनाव ने प्रदेश में तीसरे मोर्चे की संभावनाओं पर भी प्रश्न चिह्न लगा दिया है। निर्दलीय विधायक हनुमान बेनीवाल ने चुनाव से पहले जयपुर में बड़ी सभा कर यह दावा किया था कि उनके समर्थन के बिना राजस्थान की अगली सरकार नहीं बनेगी, लेकिन उनकी राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी महज 3 सीटें जीतने में सफल हुई। उन्होंने कई सीटों पर कांग्रेस और भाजपा के समीकरण जरूर खराब किए। वहीं, भाजपा से नाता तोड़ भारत वाहिनी पार्टी के बैनर तले कांग्रेस और भाजपा को चुनौती देने वाले घनश्याम तिवाड़ी का प्रदर्शन बेहद फीका रहा। उनकी पार्टी को एक भी सीट पर भी जीत हासिल नहीं हुई। छह बार विधायक रहे तिवाड़ी सांगानेर सीट से तीसरे नंबर पर रहे। वे पिछले पांच साल से वसुंधरा सरकार की घेराबंदी में लगे थे।

– **जगदीश सालवी**

सेंटिनेलिज अस्तित्व के लिए संघर्ष

-बाहरी व्यक्ति पर बरसाते हैं, पत्थर, तीर और आग के गोले

'मौत का टापू' के नाम से चर्चित भारत के अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में स्थित उत्तरी सेंटिनल द्वीप में पहुंचे अमरिकी नागरिक की हत्या

- पंकज कुमार शर्मा

अंडमान निकोबार के प्रतिबंधित क्षेत्र में पहुंचे अमेरिकी जॉन एलन चाउ (27) की 21 नवंबर को हत्या हो गई। चाउ को वहां ले जाने के आरोप में गिरफ्तार सात मछुआरों ने पुलिस को बताया कि चाउ ने जैसे ही इस क्षेत्र में कदम रखा सेंटिनेलीज (स्थानीय जनजाति) ने तीरों से हमला कर दिया। चाउ की तलाश में गए हेलीकॉप्टर को भी उस जगह उतारा नहीं जा सका। सेंटिनेलीज हेलीकॉप्टर की अपने ऊपर उड़ान को भी हमले का सूचक मानते हैं। अमेरिकी नागरिक जॉन एलन ने पांच साल पहले भी स्थानीय लोगों से मिलने की कोशिश की थी। बताया जा रहा है चाउ यहां पर एक पर्यटक के रूप में धर्म परिवर्तन करवाने आया था। अगर यहां के भौगोलिक परिवेश की बात करें तो यह एक टापू है। यहां न कोई रास्ता है न कोई गांव-ढाणी। बस समुद्री मार्ग है जिस पर गुजरने वाला सीधे मौत के दरवाजे पर पहुंचकर हमेशा के लिए दुनिया छोड़ देता है। हजारों साल से यहां आदिवासी जनजातियों का साम्राज्य है। यहां पहुंचने वाले इंसान और हवाईजहाज को तीर-कमान, पत्थर, आग के गोलों और धारदार हथियारों का सामना करना पड़ता है। भारत के अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में उत्तरी सेंटिनल द्वीप को दुनिया का सबसे खतरनाक और मौत का टापू कहा जाता है। जिस भी बाहरी व्यक्ति ने अब तक यहां पैर रखने की कोशिश की वह जिंदा नहीं लौट सका। भारत सरकार ने इस खतरनाकर टापू की यात्रा को प्रतिबंधित किया हुआ है। बंगाल की खाड़ी में चारों तरफ समुद्र से घिरे इस भारतीय टापू का हवाई नजारा बेहद खूबसूरत है। यहां केवल समुद्री मार्ग से ही पहुंचा जा सकता है। समुद्र में दूर तक जाने वाले मछुआरे भी यहां जाने की भूल नहीं करते। वर्ष 2006 में कुछ मछुआरे गलती से इस आईलैंड पर पहुंच गए थे, जिन्हें जान गंवानी पड़ी। कई साल पहले जेल से भागकर यहां पहुंचे एक कैदी को भी मार दिया गया। यह सब होते हुए भी भारतीय कानून सेंटिनेलीज की रक्षा करता है। किसी बाहरी की हत्या पर भी इस प्रजाति पर मुकदमा नहीं चलाया जाता। उनके साथ संपर्क या उनके क्षेत्रों में प्रवेश को अवैध घोषित किया गया है।

संरक्षित श्रेणी में आते है सेंटिनेलीज

सेंटिनेलीज देश-दुनिया से इस कदर कटे हुए हैं कि इनके बारे में न किसी को जानकारी है न इन्हें दुनिया का पता है। ये जब भी किसी से मिलते हैं तो हिंसक तरीके से ही पेश आते हैं। इस समुदाय के व्यवहार, रीति-रिवाज, भाषा और रहन-सहन की भी किसी को सही-सही जानकारी नहीं है। पिछले 60 हजार साल से यहां रह रहे सेंटिनेलीज को लॉस्ट ट्राइब यानी संरक्षित श्रेणी में रखा गया है। इन्हें बाहरी लोगों की दखलअंदाजी पंसद नहीं है और न ही इन्हें किसी मानव सभ्यता से कोई लेना देना है।

6 तरह की आदिवासी जनजातियां

अंडमान में मुख्य भूमि से आए हुए लोगों को छोड़ कर यहां पर कुछ मूल जनजातियां भी रहती हैं जो अब भी साधारण लोगों से अलग ही रहना पसंद करती हैं। ये अंडमान द्वीप के कई इलाकों में बसी हैं। अंडमान में 6 प्रकार की आदिवासी जनजातियों को देखा जा सकता है-जारवा, ओंगी, ग्रेट अंदमानिस,

सेंटिनेलिज ये उत्तरी अंडमान तथा दक्षिणी अंडमान में रहने वाली नेग्रीटो जनजाति है। जिनका रंग काला होता है। निकोबारी तथा शोम्पेन निकोबार में रहने वाले मोंगोलॉयड जनजाति के लोग हैं जिनका रंग गोरा है। इन तमाम जनजातियों को अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह के जिरगाटांग, बाराटांग, कदमतला, डिगलीपुर, स्ट्रेट आइलैंड, सेंटिनल आइलैंड, ग्रेट निकोबार, कार निकोबार आदि द्वीपों में देखा जा सकता है।

1991 से यहां जाना प्रतिबंधित

कहा जाता है कि अब तक जितने भी लोगों ने इन तक पहुंचने और इन्हें मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया उनको मौत के घाट उतार दिया गया। भारत सरकार भी यहां हस्तक्षेप नहीं करती है। 2004 की भयंकर सुनामी के बाद राहत के लिए यहां पहुंचे सेना के हेलीकॉप्टरों पर इस जनजाति ने पत्थर और तीर की बौछार कर थी। 1967 से 1991 के बीच भारत सरकार ने यहां के लोगों से संपर्क किया लेकिन पर्याप्त सफलता नहीं मिली। इसके बाद इस इलाके को 'एक्सक्लूसन जोन' घोषित कर दिया गया। अब यहां बाहरी शख्स के जाने पर सख्त प्रतिबंध है।

शिकार पर हैं निर्भर

इस इलाके में किसी बाहरी व्यक्ति के प्रवेश नहीं होने के कारण सेंटिनेलिज़ की कोई तस्वीरें भी दुनिया के पास नहीं है। इनकी जो भी तस्वीरें और वीडियो हैं वो काफी दूर से लेने के कारण स्पष्ट नहीं हैं। ये जनजाति इतनी पिछड़ी है कि आज भी इन्हें खेती का ज्ञान नहीं है। टापू के घने जंगलों के बीच रहने वाले ये लोग शिकार और फल खाकर पेट भरते हैं।

Mahendra Singhvi

Happy New Year

Shah Vardichand Punamchand Singhvi

Dealing in All Kinds
of Cattle Feeds,
Food Grains & Oil Seeds

10, Krishi Mandi Yard, Udaipur - 313002
Tel: 0294-2484305, 2583218(O)
2422223, 2410935 (R)

Fax : +91 294 - 2483288
E-mail : vpsinghvi@gmail.com

केसीआर की आंधी में उड़े भाजपा-कांग्रेस

समय पूर्व विधानसभा भंग कर चुनाव कराने का दांव रहा सफल, लोकसभा चुनाव जीतने की बड़ी चुनौती

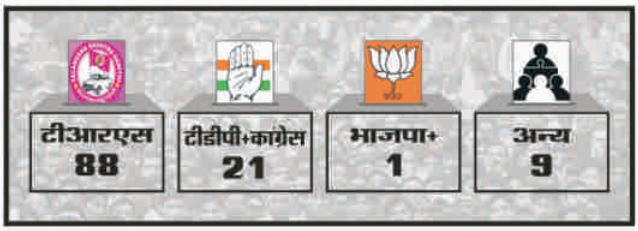

तेलंगाना में एक बार फिर केसीआर का जादू चला। के. चंद्रशेखर राव (केसीआर) का समय से पहले विधानसभा भंग करके चुनाव कराने का दांव सफल रहा। हर तीर निशाने पर लगा। उनके मुकाबले विपक्षी दलों के पास सीएम चेहरा न होना, निचले तबके को केंद्रित करके प्रस्तुत किया गया विकास मॉडल और असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम के साथ चुनावी गठजोड़ का समीकरण सटीक बैठा। दूसरी तरफ कांग्रेस ने तेलंगाना में जमीन खो चुकी टीडीपी के साथ मिलकर चुनाव लड़ा। कांग्रेस के पास कोई बड़ा क्षेत्रीय चेहरा न होना भी उसके खिलाफ गया। अल्पसंख्यक मत ओवैसी के साथ होने से केसीआर के खेमे में गए। करीब 12.5 फीसदी मुस्लिम आबादी वाले इस राज्य में कांग्रेस ने अल्पसंख्यक मतों को लुभाने का दांव चला लेकिन वह सफल नहीं रहा। अब लोकसभा चुनाव तक केसीआर को अपनी गति बनाए रखने के अलावा पिछली बार से ज्यादा सीटें जीतने की चुनौती होगी। तेलंगाना का नतीजा निश्चित रूप से चौंकाने वाला है। चुनाव से पहले केसीआर को हल्के में लेना भाजपा-कांग्रेस गलफांस बन गया। तेलंगाना की 119 में से 88 सीटें जीत कर टीआरएस सुप्रीमो ने इस बात का एहसास करा दिया है कि 2019 में वो महागठबंधन के मजबूत स्तंभ हैं। उन्हें नकारना विपक्षी एकता को भारी नुकसान पहुंचा सकता है। तेलंगाना में कांग्रेस, टीडीपी, टीजेएस और सीपीआई ने केसीआर को हराने के लिए एक गठबंधन किया था जो 'महाकुतामी' के नाम से जाना जाता है। जबकि बीजेपी ने अकेले चुनाव तो लड़ा मगर कुछ विशेष न कर पाई। महाकुतामी (महाकुटम्बी) गठबंधन को चुनाव से पहले इस बात का पूरा एहसास था कि 2014 के विधानसभा चुनावों की तरह ये चुनाव उन्हें एक बार फिर फायदा देगा। लेकिन केसीआर की पार्टी का राज्य की 88 सीटों पर जीत यह संकेत करती है कि राज्य की जनता को महाकुतामी गठबंधन का खेल समझ में आ गया और उसने इस समय को सही मानकर केसीआर का साथ दिया। के चंद्रशेखर राव ने न सिर्फ अन्य दलों के वोट अपने पाले में किये बल्कि ट्रेडिशनल वोट बैंक को भी भुनाने में कामयाब हुए।

नजरिये का युद्ध जीता केसीआर ने

महाकुतामी गठबंधन की अगुवाई कांग्रेस ने की थी। चुनाव से पहले केसीआर के खिलाफ कुछ इस तरह का माहौल तैयार किया गया कि केसीआर का सारा

फोकस कांग्रेस पर रहे। यहीं केसीआर बड़ा दाव खेल गए और उन्होंने अपने आलोचकों को ये बताने का प्रयास किया कि उनका मुकाबला कांग्रेस से नहीं बल्कि टीडीपी से है। उन्होंने कांग्रेस को खारिज कर बता दिया था कि तेलंगाना में मुकाबला केसीआर बनाम चंद्रबाबू नायडू है। कांग्रेस ने भी इसका पूरा फायदा उठाया और महाकुतामी गठबंधन की कमान चंद्रबाबू के हाथों सौंप दी। दिलचस्प ये था कि ये खुद केसीआर द्वारा बिछाया गया यह एक ऐसा जाल था जिसमें कांग्रेस औरचंद्रबाबू नायडू दोनों ही फंस गए।

दलित, ओबीसी वोट बैंक का साथ

के चंद्रशेखर राव की कुछ मुद्दों को लेकर भले ही आलोचना हो मगर इस बात को नकारना बड़ी भूल होगी कि तेलंगाना में उनकी भूमिका एक जननायक की है। उन्होंने शहरी वोटरों के मुकाबले उन वोटरों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया जो तंगहाली में थे। दलित और ओबीसी वर्ग पर भरपूर ध्यान दिया। किसानों की समस्याएं सुनी हीं नहीं, उनका निवारण भी किया। जो वोट उन्हें मिले उनमें एक बड़ा प्रतिशत इन तबको का था। अब चूंकि वे एक ऐतिहासिक जीत दर्ज कर चुके हैं ये देखना खासा दिलचस्प होगा कि तेलंगाना के विकास के लिए उनके सपने क्या है? क्या वो अपना वादा पूरा करेंगे या उनकी बात भी एक चुनावी जुमला रहेगी? साथ ही 2019 में उनकी भूमिका क्या रहेगी, वो कितनी महत्वपूर्ण होगी ये भी एक बड़ा सवाल है जिसका जवाब अभी वक्त की तह में छुपा है। टीआरएस की जीत के संकेत से साफ है कि लोकसभा चुनाव में भी अपना दबदबा बनाए रखने में वे कामयाब रहेंगे। अभी 17 लोकसभा सीटों में के पास एक, एआईएमआईएम के पास एक, कांग्रेस के पास दो जबकि वाईएसआर कांग्रेस और टीडीपी के पास एक-एक सीट है। इन नतीजों के संकेत साफ हैं कि लोकसभा चुनाव में भी उनका प्रदर्शन बेहतर हो सकता है। ऐसे में यह दल आने वाले समय में केंद्रीय राजनीति में अहम भूमिका निभा सकता है। केसीआर गैर भाजपा और गैर कांग्रेस मोर्चा बनाने के पक्षधर रहे हैं। बीच में उनकी तरफ से इसके लिए पहल भी शुरू हुई थी। अब चुनाव जीतने के बाद वह अपने अभियान को हवा दे सकते हैं।

कांग्रेस खो चुकी विश्वास

बात 2014 की है। नए राज्य तेलंगाना का गठन हुआ और इसमें साथ ही नए राज्य की राजनीति भी शुरू हुई। तेलंगाना के गठन में दो दल अपना फायदा देख रहे थे एक टीआरएस जिसने इस राज्य के गठन के लिए लगातार संघर्ष किया तो दूसरी तरफ कांग्रेस जिसने यूपीए-2 के दौरान राज्य के निर्माण की स्वीकृति दी। इसके बाद चुनाव हुए तो टीआरएस 63 सीटें जीतने में कामयाब हुई। वो 2014 था और ये 2018 है। तब के हालात कुछ और थे व वर्तमान स्थिति कुछ और है। 2018 में तेलंगाना में टीआरएस की हैसियत एक बड़े विजेता की है। तेलंगाना में कांग्रेस क्यों नहीं आई इसकी एक बड़ी वजह वो विश्वास है जो कांग्रेस यहां खो चुकी है। कांग्रेस का टीडीपी के साथ मिलना लोगों को नागवार गुजरा। साथ ही यह सवाल भी उठे कि आखिर कांग्रेस कैसे एक दुश्मन को गले लगा सकती है।

- मनीष उपाध्याय

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

HOTEL VENKTESH

A Place of Royal Hospitality

For Booking Contact :
098873 88428, 088758 58584

2/5, Dholi Magri, Shivaji Nagar, Nr. Railway Station, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294-2481083, E-mail : hotelvenkteshudr@gmail.com

लाभ-शुभ से जुड़ा हो रसोईघर

घर में किचन एक ऐसी जगह है, जहां से सारे परिवार की सेहत जुड़ी है। रसोईघर से परिवार का पोषण होता है। उसकी दिशा और बनावट का भी पूरे परिवार पर असर पड़ता है। वास्तु के अनुसार रसोईघर कैसा हो, यह आप भी जानिए ***नरेश सिंगला*** *से।*

रसोईघर का वास्तु सही है अथवा नहीं, यह कैसे जाना जाए ? घर का कोई न कोई सदस्य लगतार बीमार बना रहता है, लगातार होने वाले आर्थिक नुकसान, कर्ज, सदस्यों के बीच तनातनी, विशेषकर महिला सदस्यों के बीच हर समय की अनबन। ये सारे लक्षण इस बात की ओर इशारा करते हैं कि रसोईघर वास्तु के लिहाज से दोषपूर्ण है। आइए, जानते हैं वास्तु और फेंगशुई के रसोईघर से जुड़े कुछ ऐसे नियम, जिन्हें अपनाकर आप अपने परिवार को सेहत और खुशहाली का तोहफा दे सकते हैं।

बिजली उपकरण

ओवन, हीटर आदि को दक्षिण अथवा दक्षिण-पूर्व में स्थापित करना चाहिए। वहीं रेफ्रिजरेटर को उत्तर या पश्चिम में रखा जा सकता है, लेकिन इसे उत्तर-पूर्व में न रखें। एक्जास्ट फैन या वेंटिलेशन के लिए खिड़की पूर्व की दीवार में बना सकते हैं, वहीं छोटी खिड़की या वेंटिलेशन के लिए दक्षिण की दीवार भी उपयुक्त है।

साज-सज्जा

रसोईघर में इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों के अनुसार उसकी साज-सज्जा की जानी चाहिए। रसोई का फर्श मार्बल अथवा सिरामिक टाइल्स का बनाया जा सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य से जुड़ा होने के कारण नारंगी रंग रसोईघर के लिए आदर्श है। इससे मिलते-जुलते रंग जैसे लाल, पीला, गुलाबी भी उपयुक्त हैं। लेकिन नीला या बैंगनी रंग उपयुक्त नहीं है। अगर रसोई घर उत्तर-पूर्व भाग में बना है तो वहां लेमन यानी हल्का पीला रंग करवाएं।

रसोईघर की आवश्यक दिशा

घर के मध्य, उत्तर, उत्तर-पूर्व, पश्चिम भाग के मध्य, दक्षिण भाग के मध्य में और दक्षिण-पश्चिम में रसोईघर का निर्माण नहीं करना चाहिए। रसोई मुख्य द्वार के ठीक सामने भी नहीं होना चाहिए। रसोईघर, बाथरूम व टॉयलेट की दीवार से सटा नहीं होनी चाहिए। रसोई जहां अग्नि तत्व का प्रतीक है, वहीं बाथरूम अथवा टॉयलेट जल तत्व के प्रतीक हैं। ये दोनों ही तत्व एक-दूसरे के विपरीत माने जाते हैं। यह स्थिति परिवार में तनाव उत्पन्न करती है और स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है। खाना बनाने के स्टोव यानी गैस चूल्हे को दक्षिण-पूर्व में रखना चाहिए। लेकिन खयाल रखें कि यह पूर्व की दीवार से सटा हुआ न होकर कुछ इंच दूर हो। चूल्हे की स्थिति ऐसी हो कि वह बाहर से दिखाई न दे। गैस सिलेंडर को भी दक्षिण-पूर्व में रखना चाहिए। लेकिन खाली गैस सिलेंडर को दक्षिण-पश्चिम में रखें।

अन्य सामान्य सुझाव

- रसोईघर में सामान फैला हुआ एवं अव्यवस्थित न हो।
- जहां तक संभव हो रसोईघर का दरवाजा बंद रखें।
- रसोईघर में बिजली के ज्यादा उपकरणों को न रखें।
- रसोईघर में चूल्हे का विशेष महत्व है। इसलिए इसे स्वच्छ रखें।
- टूटे हुए, इस्तेमाल में न आने वाले बर्तन, बासी व अस्वास्थ्यकारक भोजन को रसोईघर में नहीं रखना चाहिए। इन चीजों को जितना शीघ्र हो सके, रसोईघर से हटा दें।
- अनाज व दालों को रसोईघर में पश्चिम या दक्षिण दिशा में रखें।
- रसोईघर का दरवाजा उत्तर, पूर्व अथवा पश्चिम दिशा में हो।

Dheeraj Doshi **Happy New Year** MEMBER
Hotel Association,
Udaipur

Hotel Darshan Palace

UIT Circle, Saheli Marg, Udaipur 313001 (Raj.)
Phone : (0294) 2425679, 2427364, E-mail : dhiru58364@rediffmail.com
website: www.hoteldarshanpalaceudaipur.com

क्रांतिकारी संत गुरु गोविंद सिंह

सवा लाख से एक लड़ाऊं,
चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊं
तबे गोबिंद सिंह नाम कहाऊं।

– शूरवीर सिंह कच्छावा

यूं तो भारत में कई संत हुए जिन्होंने वैराग्य के मार्ग पर चलकर अनगिनत लोगों को जीवन और परोपकार का वास्तविक अर्थ समझाया लेकिन गुरु गोविंद सिंह जैसा संत विरला ही था। वे सिखों के दसवें गुरु हैं। इतिहास में गुरु गोविंदसिंह एक विलक्षण क्रांतिकारी संत व्यक्तित्व के साथ महान कर्मप्रणेता, अद्वितीय धर्मरक्षक, ओजस्वी वक्ता, वीर रस के कवि व जुझारू योद्धा भी थे। उनमें भक्ति और शक्ति, ज्ञान और वैराग्य, मानव समाज का उत्थान और धर्म और राष्ट्र के नैतिक मूल्यों की रक्षा हेतु त्याग एवं बलिदान की मानसिकता से ओत-प्रोत अटूट निष्ठा तथा दृढ़ संकल्प की अद्भुत प्रधानता थी। स्वामी विवेकानंद ने गुरुजी के त्याग एवं बलिदान का विश्लेषण करने के पश्चात कहा कि ऐसे ही व्यक्तित्व का आदर्श सदैव हमारे सामने रहना चाहिए। कहा जाता है कि गुरुनानक देव की ज्योति उनमें प्रकाशित हुई इसलिए उन्हें दसवीं ज्योति भी कहा जाता है। बिहार राज्य की राजधानी पटना में इनका जन्म 1666 ई. में हुआ था। सिख धर्म के नौवें गुरु तेगबहादुर साहब की इकलौती संतान के रूप में जन्मे गोविंद सिंह की माता का नाम गुजरी था। गुरु तेगबहादुरसिंह गुरु गद्दी पर बैठने के पश्चात आनंदपुर में एक नए नगर का निर्माण कर भारत यात्रा पर निकल पड़े। जिस तरह गुरु नानक देव ने सारे देश का भ्रमण किया उसी तरह गुरु तेगबहादुर ने भी जगह-जगह सिख संगत स्थापित की। गुरु तेगबहादुर जब अमृतसर से 800 किमी दूर गंगा के तट पर बसे शहर पटना पहुंचे तो स्थानीय सिख संगत ने अथाह श्रद्धा प्रकट करते हुए उनसे विनती की कि वे पटना में ही रहें। अतएव नवम् गुरु अपने परिवार को वहीं छोड़कर बंगाल होते हुए आसाम की ओर चले गए। पटना में वे अपनी माता नानकी, पत्नी गुजरी तथा उनके भाई (साले) कृपालचंद को छोड़ गए। पटना की संगत ने गुरु परिवार के लिए एक सुंदर भवन का निर्माण करवाया जहां गुरु गोविंद सिंह का जन्म हुआ। गुरु तेगबहादुर को यह खुशी की खबर आसाम पहुंचाई गई। पंजाब में जब गुरु तेगबहादुर के घर पुत्र जन्म की सूचना पहुंची तो सिख संगत ने उत्साह व उमंग से खुशियां मनाई। उस समय करनाल के समीप सिआणा में एक मुस्लिम संत फकीर भीखण शाह रहते थे। जब गुरु गोविंद सिंह का जन्म हुआ उस समय भीखण शाह अपने गांव में समाधि में लिप्त थे। उसी अवस्था में उन्हें प्रकाश की एक नई किरण दिखाई दी जिसमें उन्होंने एक नवजात बालक का प्रतिबिंब देखा। भीखण शाह को यह समझते देर नहीं लगी कि दुनिया में ईश्वर के किसी प्रिय बंदे का अवतरण हुआ है। यह और कोई नहीं गुरु गोविंद सिंह जी थे।

पुत्र के रूप में

मुगलों के अत्याचारों के खिलाफ हमेशा सीना तानकर खड़े रहे। उन्होंने अपने जैसे कई बहादुरों को धर्म के रास्ते पर चलने का पाठ पढ़ाया। यहां तक कि उन्होंने एक पुत्र के रूप में पिता से धर्म की रक्षा खातिर अपने बलिदान का आग्रह भी किया।

पिता के रूप में

अगर इन्हे पिता के रूप में देखें तो भी इनके जैसा महान पिता कोई नहीं हुआ। इन्होंने अपने बेटों को शस्त्र दिए और कहा कि जाओ धर्म की रक्षार्थ मैदान में दुश्मन का सामना करो और शहीदी जाम का रसपान करो।

योद्धा के रूप में

इनके हर तीर पर सोना मढ़ा था। जब इसका कारण पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मेरा कोई दुश्मन नहीं है। मेरी लड़ाई जुल्म के खिलाफ है। इन तीरों से जो कोई घायल होंगे वो सोने की मदद से अपना इलाज करवा कर अच्छा जीवन व्यतीत कर सकेंगे और अगर उनकी मौत हो गई तो परिवार को अंतिम संस्कार में सहायता मिलेगी।

त्यागी के रूप में

अगर एक त्यागी के रूप में देखा जाए तो आपने आनंदपुर के सुख छोड़, मां की ममता, पिता का साया, बच्चों के मोह को आसानी से धर्म की रक्षा के लिए त्याग दिया।

गुरु के रूप में

आपके जैसा गुरु भी कोई नहीं जिसने अपने को सिखों के चरणों में बैठ अमृत की दात मंगाई और वचन किया कि मैं आपका सेवक हूं जो हुकूम दोगे मंजूर करूंगा। समय आने पर उन्होंने सिखों के हुकूम की पालना भी की। उनके जीवन का हर पल परोपकार में व्यतीत हुआ। आपके जितने गुणों का बखान किया जाए वो कम ही है। अंत में बस इतना ही कि 'जैसा तू तैसा तू ही क्या किछ उपमा दी जें।'

उपनिदेशक के रूप में

इनके उपदेशों के ग्रंथ की भाषा बहुत सहज और स्पष्ट है, जो व्यक्ति को सेवा और स्वाभिमान और भक्ति का संदेश देती है।

श्रद्धांजलि

जन्म :
2 फरवरी 1931

निधन :
30 जनवरी 2016

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल भोमट (झाड़ोल-फ.) क्षेत्र में घर-घर शिक्षा की अलख जगाने वाले सरलमना, प्रेरक व्यक्तित्व, कीर्तिशेष

श्रीयुत पं. जीवतरामजी शर्मा

(संस्थापक, राजस्थान बाल कल्याण समिति)
की द्वितीय पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्रद्धावनत :

राजस्थान बाल कल्याण समिति परिवार।

तिल चटके, सर्दी सटके

सर्दी का मौसम है। इसमें तिल और गुड़ खाना सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। मकर-संक्रान्ति पर भी घरों में परम्परागत रूप से तिल के व्यंजन ही बनाए जाते हैं। इस पर्व पर तिल के लड्डू बांटने की भी परम्परा है। आइये जानते हैं, घर में गुड़ अथवा शक्कर के साथ बनने वाले तिल के कुछ व्यंजनों के बारे में।

तिल हलवा

सामग्री : 200 ग्राम सफेद तिल, 100 ग्राम चीनी, 2 कप दूध, कटे मेवे, घी आवश्यकतानुसार।

विधि : तिल को रात में पानी भिगो दें। सुबह महीन पीस लें। कढ़ाई में घी डालकर खूब अच्छा भून लें। दूध डाल दें। जब दूध अच्छी तरह तिल में घुल मिल जाए व खूब गाढ़ा हो जाए तो चीनी अथवा गुड़ डालकर चम्मच से हिलाएं। चीनी-गुड़ गल जाने पर कतरे मेवे डालकर उतार लें। तिल का टेस्टी हलवा तैयार है।

तिल बर्फी

सामग्री : 1 कटोरी भूने व पिसे तिल, 1 कटोरी भूने व दरदरे मूंगफली के दाने, 3 कटोरी मावा, 3 चम्मच चाकलेट पाउडर, डेढ़ कटोरी पिसी चीनी, 3 बूंद केवड़ा जल, 50 ग्राम काजू, 20 ग्राम पिस्ता सजाने के लिए।

विधि : आंच पर एक कड़ाही में मावा भूनकर उसमें तिल, चीनी, मूंगफली के दाने, केवड़ा जल डालें। इसे चम्मच से अच्छी तरह हिलाने के उपरांत आधे मिश्रण में चॉकलेट पाउडर मिलाएं। अब दोनों तरह के मिश्रणों को घी चुपड़ी ट्रे में फैलाकर ठंडा होने दें। ठण्डे होने पर मनचाहे आकार में काटें। सादा पीस के ऊपर चाकलेटी पीस रखें तथा काजू व पिस्ते से सजाकर खाएं और खिलाएं भी।

तिल-खजूर रोल

सामग्री : खजूर-200 ग्राम, सिकी मूंगफली-आधा कप, सफेद तिल-पौन कप, इलायची पाउडर-एक छोटा चम्मच।

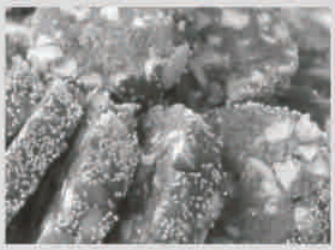

विधि : सबसे पहले तिल को बिना घी-तेल के सेक लें। सिकी मूंगफली को दरदरा कर लें। खजूर को एकदम बारीक-बारीक काट लें। अब पैन में कटे खजूर डालकर धीमी आंच पर सेंकें, जिससे खजूर नरम हो जाएं। अब इसमें दरदरी मूंगफली, सिके तिल और पिसी इलायची डालें। अच्छी तरह मिलाएं। तैयार मिश्रण से मध्यम आकार के रोल बनाकर उन्हें सिके तिल से कवर कर सर्व करें।

तिल गुझिया

सामग्री : 1 छोटी कटोरी तिल, 2 छोटी कटोरी मैदा, 2 छोटी कटोरी घी, आधी कटोरी कद्दूकस किया नारियल, आधी कटोरी खरबूज के बीज, एक कटोरी पिसी चीनी, तलने के लिए तेल या घी।

विधि : सबसे पहले मोयन डालकर मैदा गूंथे। तिल को हल्का भूनकर पीस लें। खरबूजे के बीज व नारियल के कस को भी भूनकर पीस लें। तिल, पीसे खरबूजे के बीज, गरी, चीनी, इलायची का पाउडर अच्छी तरह मिला लें। मैदा की छोटी-छोटी पुरीयां बनाकर तिल का मिश्रण भरें। इन्हें धीमी आंच पर हल्का सुनहरा तल लें। तिल की मीठी-मीठी गुझिया तैयार हैं।

– उर्वशी शर्मा

नववर्ष की हार्दिक
शुभकामनाओं सहित

KTH

कमल भावसार
94141–57241
96360–50631

कमल टेन्ट हाऊस

बेस्ट वर्क, चुन्नी डेकोरेशन, टेन्ट,
लाईट डेकोरेशन, केटरिंग मंडप,
फ्लॉवर स्टेज एवं शादी-पार्टी
सम्बन्धित कार्य किए जाते हैं

युनिवरसिटी, कालका माता मेन रोड, उदयपुर

उर्जित को स्वीकार नहीं था सरकार का दबाव

-सुधीर जोशी

पिछले साल की शुरुआत में सुप्रीम कोर्ट के चार सीनियर जज पहली बार मीडिया से मुखातिब हुए। इन्होंने एक प्रेस कॉंफ्रेंस में कहा कि न्यायपालिका की आजादी खतरे में है। 10 दिसंबर को भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर उर्जित पटेल ने इस्तीफा देकर खतरे के इस संकेत की और मजबूती से पुष्टी कर दी। उर्जित का इस्तीफा ऐसे समय आया जब सभी को ये लग रहा था कि केंद्र और आरबीआई के बीच अब सब कुछ ठीक है। 19 नवंबर को केंद्र और आरबीआई के बीच हुई बैठक को आरपार की लड़ाई के तौर पर देखा जा रहा था लेकिन वो शांति से निपट गई। सभी को यकीन था कि अब दोनों पक्षों के बीच हालात सामान्य हैं और दोनों ही साथ काम करने के लिए राजी हैं। लेकिन अचानक उर्जित के इस्तीफे की खबर से ये संभावना प्रबल हो गई कि कुछ महत्वपूर्ण संस्थानों की गरिमा भी दांव पर है। अब ये जानना जरूरी हो गया है कि आखिर कौन है जिसके इशारे पर या जिसके चाहने पर भारत की इन संस्थाओं में मनमानी की जा रही है। उर्जित पटेल की बात की जाए तो वे हमेशा सरकार के दबाव में काम करने वाले गवर्नर के तौर पर ही देखे गए, लेकिन अचानक ऐसा क्या हुआ कि वे दबाव से उबरने के लिए तड़प उठे? अगर यह लड़ाई स्वायत्तता को दांव पर लगाने की नहीं है तो क्या है? मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमण्यम की तरह ही उर्जित ने भी इस्तीफा देने पर निजी कारणों का हवाला दिया। नवंबर के

'शक्ति' बनेंगे सरकार और आरबीआई की 'शक्ति'

उर्जित पटेल के इस्तीफे के बाद शक्तिकांत दास आरबीआई गर्वनर बने हैं। वे नरेंद्र मोदी सरकार के बड़े समर्थक माने जाते हैं। माना जा रहा है कि उनकी नियुक्ति से सरकार कुछ अहम फैसलों में आरबीआई का समर्थन पा सकेगी। आरबीआई के कैश रिजर्व और स्वायत्तता जैसे मसलों पर शक्तिकांत दास केंद्र सरकार के फैसलों पर मुहर लगवा सकते हैं। दास केंद्र सरकार के आर्थिक मामलों में काफी अरसे से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उन्होंने मोदी सरकार के फैसलों पर दूसरे अफसरों की तरह कभी उंगली नहीं उठाई। 8 नवंबर, 2016 को जब नरेंद्र मोदी सरकार ने नोटबंदी का फैसला किया था तब शक्तिकांत दास ने इस फैसले को लागू कराने में बड़ी भूमिका अदा की थी। उस वक्त दास को देश के ताकतवर अफसरों में गिना जाता था। वे आर्थिक मामलों के सचिव थे। हाल में ब्यूनस आयर्स में 2 दिन की सालाना जी-20 देशों की बैठक में शक्तिकांत दास को भारत का शेरपा नियुक्त किया गया था। शेरपा उस अफसर को कहते हैं, जो सरकार या सरकार के मुखिया की ओर से दूसरे देशों के साथ बातचीत करता है। इस बैठक में पीएम मोदी भी मौजूद थे। दास आईएएस अफसर के तौर पर आर्थिक मामलों के सचिव, राजस्व सचिव और उर्वरक सचिव के तौर पर काम कर चुके हैं। अब उनको आरबीआई के गवर्नर की जिम्मेदारी सौंपी गई है। अब देखना ये होगा कि उर्जित पटेल के जाने के बाद क्या शक्तिकांत अपनी शक्ति के दम पर सरकार और आरबीआई के बीच सामंज्यस बिठा पाएंगे या नहीं। इधर, 14 दिसंबर को नए गवर्नर की अध्यक्षता में पहली बोर्ड की पहली बैठक हुई। इसमें गवर्नेंस, बैंक कर्ज और नकदी संकट जैसे विवादास्पद मुद्दों पर चर्चा तो हुई, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। चार घंटे चली बैठक के बाद जारी बयान में रिजर्व बैंक ने कहा है कि गवर्नेंस के मुद्दे पर आगे और बातचीत होगी। 18 सदस्यों वाले बोर्ड ने मौजूदा आर्थिक परिस्थितियों के साथ ग्लोबल और घरेलू चुनौतियों पर भी चर्चा की।

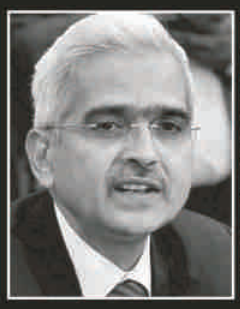

महीने में जब यह विवाद आया कि सरकार चाहती है कि रिजर्व बैंक के पास जो 3 लाख 60 हजार करोड़ का रिजर्व फण्ड है वो वह सरकार को दे दे। आखिर सरकार को क्यों जरूरत पड़ी कि वो रिजर्व खजाने से पैसा ले जबकि वह दावा करती रही है कि आयकर और जीएसटी के कारण उसका राजस्व काफी बढ़ गया है। रिजर्व बैंक अपने सरप्लस का एक साल में 50,000 करोड़ के आसपास देता ही है लेकिन 3 लाख 60 हजार करोड़ की मांग पर रिजर्व बैंक के कदम ठिठक गए। वह अपनी पूंजी उन बैंकों को नहीं देना चाहता था जिनके पास लोन देने के लिए पूंजी नहीं है। जिनका एनपीए अनुपात से कहीं ज्यादा हो चुका है। नवंबर में हुई रिजर्व बैंक के बोर्ड बैठक को लेकर ही चर्चा थी कि उर्जित पटेल इस्तीफा दे देंगे मगर ऐसा नहीं हुआ। तब लगा कि मामला सुलझ गया मगर कोई कब तक बिगाड़ के डर से ईमान को रोके रहता। इस विवाद की आहट सुनाई दी थी जब डिप्टी गवर्नर विरल आचार्य ने अर्जेंटीना का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां की सरकार भी रिजर्व बैंक के खजाने को हथियाना चाहती थी। विरोध में गवर्नर ने इस्तीफा दिया और वहां तबाही आ गई। सितंबर 2019 में उर्जित पटेल का कार्यकाल पूरा हो रहा था। वे 2013 में डिप्टी गवर्नर और 5 सितंबर 2016 को गवर्नर बने। उर्जित पटेल ने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। हमें ये जानना जरूरी है कि क्यों उर्जित पटेल का इस्तीफा उनके विरोध का प्रतीक बन गया। अर्थव्यवस्था के भीतर वे कौन से अनजाने हालात पैदा हो रहे हैं जो रिजर्व बैंक की स्वायत्तता को गटक जाना चाहते हैं? यह अर्थव्यवस्था के लिए शुभ नहीं है। कुछ लोग उर्जित पटेल के इस्तीफे को नोटबंदी से भी जोड़ते हैं। क्योंकि नोटबंदी पर वे दो साल तक चुप रहे। और जब उनकी चुप्पी टूटी तो बस इतना कहा कि नोटबंदी के वक्त जितना कैश चलन में था 99 प्रतिशत से अधिक वापस आ गया।

इस्तीफे के पीछे की कहानी

सरकार हमेशा इस बात से इंकार करती रही है कि राजकोषीय घाटा पूरा करने के लिए वो रिजर्व बैंक से और ज्यादा पैसे की मांग कर रही थी। लेकिन आरबीआई ने इससे साफ इंकार करते हुए अर्थव्यवस्था की स्थिरता को ज्यादा जरूरी बताया।

सरकार चाहती थी कि आरबीआई तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई (पीसीए) ढांचे में थोड़ी ढील दें। सरकार का कहना है कि कठोर मानदंडों के कारण क्रेडिट ग्रोथ को नुकसान पहुंचा है। सरकार म्यूचुअल फंड, एनबीएफसी और आवास वित्त कंपनियों के लिए एक विशेष रिफाइनेंस विंडो की मांग कर रही थी। लेकिन देश की दीर्घकालिक वित्तीय स्थिति बनाए रखने के मकसद से भारतीय रिजर्व बैंक आर्थिक विकास के अल्पकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए नियंत्रण को कम नहीं करना चाहती थी। इन्हीं कारणों से रिजर्व बैंक और केंद्र के बीच विवाद था।

प्रयागराज में सिमटेगा पूरा भारत

- विष्णु शर्मा हितैषी

दिव्य, अलौकिक, अद्भुत, अविस्मरणीय। इन सभी शब्दों का अर्थ एक स्थान पर महसूस करना है तो प्रयागराज जाएं। मौका है दुनिया के सबसे बड़े आयोजन कुंभ-2019 का। दुनिया के सबसे बड़े आयोजन का श्रीगणेश पीएम नरेंद्र मोदी ने किया। इसी के साथ तीर्थों के राजा प्रयागराज का नक्शा भी इस आयोजन से बदल गया। कल्पवास करने वालों के तप का प्रयागराज साक्षी बनने को तैयार है। कुंभ का ताना-बाना ऐसा बुना गया है कि यहां आने वाला हर शख्स श्रद्धा की अमिट छाप के साथ लौटे। 16 जनवरी 2019 से प्रयागराज (उप्र) में शुरू हो रहे कुंभ मेले में सभी विदेशी राजदूतों को भी आमंत्रित किया गया है। इसके पीछे उन्हें भारत के अध्यात्म और आस्था के ज्वार से रूबरू कराना है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इन विदेशी राजदूतों और उच्चायुक्तों को यह भी दिखाना चाहते हैं कि करोड़ों लोगों के आवास के लिए एक अस्थाई शहर कैसे बनता है और 48 दिनों तक इसकी व्यवस्था का संचालन कैसे होता है। यूनेस्को ने भी कुंभ को भारत की सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी है। मुख्यमंत्री योगी ने देश के 6 लाख गांवों को भी कुंभ स्नान के लिए प्रयागराज आने का न्यौता दिया है। यह न्यौता उन्होंने राज्यों के मुख्यमंत्रियों से आग्रह कर जिलाधिकारियों की मार्फत गांव-गांव भिजवाया है। उन्होंने रेल मंत्रालय से भी देश के अलग-अलग हिस्सों से प्रयाग के लिए 400 ट्रेनों के इंतजाम का आग्रह किया है।

श्रद्धा, विश्वास और संस्कृति की त्रिवेणी का महाकुंभ 16 जनवरी से आरंभ, अखाड़ों के शाही स्नान, विभिन्न घाटों पर मोक्ष कामना के साथ लगेंगी डुबकियां

दिव्य होता है नगर प्रवेश व पेशवाई

कुंभ की शान अखाड़े हैं। देशभर में स्थित सभी 13 अखाड़े यहां कुंभ के दौरान आएंगे। अखाड़ों का नगर सीमा में प्रवेश और हाथी-घोड़े, सन्यासियों की टोली और ढोल-नंगाड़ों के साथ प्राचीन वाद्य यंत्रों की गूंज के साथ आरंभ हो गया है। कुंभ में सभी अखाड़ों को किले से करीब 3-4 किमी दूर एक विशाल मैदान में अपने डेरे लगाने के लिए लाखों वर्गमीटर जगह दी गई है। नागा संन्यासी अखाड़ों का खास दबदबा होगा। दिसंबर के आखिरी सप्ताह से अखाड़ों की पेशवाई का सिलसिला शुरू हो चुका है।

अक्षयवट के दर्शन पहली बार

इस बार का कुंभ इस मामले में भी अनूठा होगा कि यहां आने वाले श्रद्धालुओं को पहली बार अक्षय वट वृक्ष और सरस्वती कूप के दर्शन होंगे। ये दोनों ही संगम पर स्थित अकबर के किले के भीतर है और किला रक्षा मंत्रालय के अधीन है, जहां आम नागरिकों का प्रवेश वर्जित है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 16 दिसंबर को प्रयागराज गए थे तब मुख्यमंत्री के आग्रह पर उन्होंने आम नागरिकों को अक्षय वट वृक्ष तक जाने की घोषणा की थी। प्रयागराज गंगा, जमुना और सरस्वती (त्रिवेणी) नदियों का संगम है। इसमें सरस्वती अदृश्य रूप में है लेकिन उनके दर्शन सरस्वती कूप में अभी भी हो सकते हैं। यह कूप भी इसी किले में है। प्रधानमंत्री ने प्रयागराज में 4048 करोड़ रुपए की अन्य 366 परियोजनाओं का शिलान्यास भी किया। इधर भारद्वाज आश्रम, ऋग्वेद आश्रम और वेणीमाधव मंदिर का सौंदर्यीकरण किया गया है। वेणीमाधव को प्रयागराज का इष्टदेव माना जाता है। जबकि भारद्वाज आश्रम इस शहर का सबसे पुराना आश्रम है। शहर में अस्थाई निर्माण कार्यों के साथ कुछ स्थायी निर्माण भी करवाए जा रहें हैं, जिनमें 12 आरबी शामिल है। सडक़ों को चौड़ा किया जा रहा है और अंडर पास बनाए गए हैं। सभी चौराहों का सौंदर्यीकरण किया गया है।

कुंभ स्नान पर्व और तिथि

15 जनवरी	:	मकर संक्रांति
21 जनवरी	:	पौष पूर्णिमा
04 फरवरी	:	मौनी अमावस्या
10 फरवरी	:	बसंत पंचमी
19 फरवरी	:	गांधी पूर्णिमा
04 मार्च	:	महाशिवरात्रि

अखाड़े जो होंगे शामिल

श्री निरंजनी अखाड़ा, श्री जूना अखाड़ा, श्री महानिर्वाणी अखाड़ा, श्री अटल अखाड़ा, श्री आवाहन अखाड़ा, श्री आनंद अखाड़ा, श्री पंचाग्नि अखाड़ा, श्री निर्मोही अखाड़ा, श्री निर्वाणीअनि अखाड़ा, श्री दिंगर अनि अखाड़ा, श्री बड़ा उदासीन अखाड़ा, श्री नया उदासीन अखाड़ा, श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा आदि।

अखाड़ों को है पहले स्नान का हक

स्नान पर्वों के मौके पर संगम स्नान का पहला हक अखाड़ों का है। अखाड़ों के संन्यासी पूरे जोश और साजो सामान के साथ संगम तट तक पहुंचने लगे है। इनके लिए विशेष रास्ता बनाया गया है। रास्ते पर बैरिकेडिंग की गई ताकि कोई अन्य इस रास्ते से प्रवेश न कर सके। अखाड़ों को शाही स्नान के लिए अलग-अलग टाइमिंग तय की गई है। यानी एक अखाड़ा स्नान करके लौटेगा तभी दूसरा स्नान के लिए संगम पहुंचेगा।

हर राज्यों के स्वाद का उठाए लुत्फ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से संस्कार भारती मेला एरिया में दो स्टेज बनाए गए। एक मंच पूर्वोत्तर राज्यों के लिए संरक्षित रहेगा। यहां सिर्फ संस्कृति ही नहीं बल्कि इन राज्यों के लजीज भोजन भी सबके लिए उपलब्ध होंगे। 15 दिसंबर को मनुहार गंगा कार्यक्रम आयोजित हुआ इसमें हर राज्य के प्रतिनिधि को गंगा जल के साथ पूजन सामग्री प्रदान की गई। अपने अपने राज्यों की नदी का जल कलश भरने के बाद 12 जनवरी को संगम तट पर जुटेंगे। वहां पर एक साथ सभी राज्यों की नदियों का जल गंगा में प्रवाहित किया जाएगा।

खर्च पर एक नजर

2800 करोड़ : कुंभ मेले में स्थायी-अस्थायी निर्माण पर खर्च

525 कुल परियोजनाओं पर खर्च की धनराशि

900 करोड़ खर्च किए गए है अस्थायी परियोजनाओं पर

1300 हेक्टेयर में बनाए जाएंगे 82 पार्किंग स्थल

5000 स्विस कॉटेज का निर्माण मेला प्रशासन की तरफ से किया गया

सुरक्षा व्यवस्था

10000 पुलिसकर्मी लगाए है सुरक्षा व्यवस्था तैनात

40 थाने होंगे कुंभ एरिया में

58 पुलिस चौकियां देगी थाने का बैकअप

03 महिला थानों की स्थापना

20 सर्किल रैंक के ऑफिसर तैनात

53 डीएसपी रैंक के ऑफिसर लगाए

52 एडीशनल स्तर के ऑफिसर तैनात

कुंभ के कर्मकांड

प्रकृति स्वरूपों की वंदना : भारत में प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों (नदी, पर्वत, वृक्ष व अन्य) को देव स्वरूप मान कर उनकी आराधना का प्रचलन है। सरल शब्दों में जीवनदायिनी के प्रति मानव कृतज्ञ होकर भावों की अभिव्यक्ति उनके तट पर आरती के माध्यम से करता आ रहा है।

स्नानदान कुंभ का अहम हिस्सा : कुंभ मेला हिंदू तीर्थयात्राओं में सर्वाधिक पावन तीर्थयात्रा है। स्नान कर्म कुंभ के कर्मकांडों में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। करोड़ों तीर्थयात्री और आगंतुक कुंभ मेले में भाग लेते हैं। पवित्र त्रिवेणी संगम पर मोक्ष कामना के साथ डूबकी लगाते हैं।

दीपदान का विधान : असंख्य दीपों की झिलमिलाहट से त्रिवेणी संगम एक अद्वितीय अनुभूति से अंतरमन को भर देता है। कुंभ मेले पर मां गंगा को दीप समर्पित करने का विधान है। इसमें श्रद्धालु आटे के दीपक बना उसमें घी-तेल में भीगी बाती जलाकर जल में समर्पित करते हैं।

इकलौता शहर प्रयागराज

कुंभ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से नहीं शुरू हुआ था बल्कि इसका इतिहास समय द्वारा खुद ही बना दिया गया। कुंभ का शाब्दिक अर्थ है कलश और यहां कलश का संबंध अमृत कलश से है। वही, अमृत कलश जो समुद्र मंथन के दौरान प्रकट हुआ था। यही कारण है कि कालांतर में वर्णित स्थानों पर ही ग्रह-राशियों के विशेष संयोग पर 12 वर्षों में कुंभ मेले का आयोजन होता है। कुंभ का आयोजन देश के चार शहरों प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में किया जाता है। हर शहर में इसका आयोजन 12 साल बाद होता है। लेकिन प्रयागराज इकलौता ऐसा शहर है जहां कुंभ का आयोजन प्रत्येक छह साल पर होता है। पहले छह साल पर होने वाले आयोजन को अर्द्ध कुंभ के नाम से जाना जाता था लेकिन प्रदेश सरकार ने इसी साल इसका नाम बदलकर कुंभ रख दिया। 12 साल पर प्रयागराज में होने वाले आयोजन को अब महाकुंभ कहा जाता है।

सहजता भी करती है, विचलित

कविता लगातार कवि के मन में चलते रहने वाली प्रक्रिया है। डॉ. कैलाश नीहारिका की कविताओं का अपना एक मिज़ाज़ एक शिल्प और कहने का ख़ास अन्दाज़ है। उनके

पृष्ठ : 124
मूल्य 120/-
प्रकाशक :
बोधि प्रकाशन, जयपुर

जुलाई 2018 में प्रकाशित 'धारा को रोकते नहीं पहाड़' काव्य संग्रह की कविताएं एक आइने की मानिन्द हैं। जिसमें उन्होंने बड़ी गहराई से अपनी अनुभूति और सरोकारों की संपुजित सृष्टि की है। अनुभूति और अभिव्यक्ति की मार्मिकता उनकी कविताओं की विशेषता है। संग्रह के शुरुआती पन्ने पर सृजन का श्रेय वे अपनी 'माँ' को देती हैं, जिन्हें उन्होंने बचपन से ही शब्दों में रमते देखा था। कविता में भावों को देशी शब्दों से बुनने का शिल्प उन्होंने मां से ही सीखा। यही शिल्प इस संग्रह को खास पहचान देता है।

'धारा को रोकते नहीं पहाड़' संग्रह में छोटी-बड़ी 88 कविताएं हैं। हर कविता का अपना अलग मिज़ाज़, शिल्प और संदेश है। समाज की मान्यताओं और विद्रूपताओं को बहुत कुशलता के साथ उन्होंने अभिव्यक्ति दी है, तो कहीं ऐसे सवाल भी उठाए हैं, जिनका उत्तर उन्हें ही नहीं सबको चाहिए। *चांदनी के घरों में रहते हो/जान पाओगे कैसे/अमावसी रातों का सच/*कवयित्री ने आधी दुनिया के दर्द को भी खुद सहजते हुए उसे स्वर तो दिया ही है, उनके कुशलक्षेम के लिए 'नई भूमिका' को गढ़ने की ज़रूरत भी बताई है।

*आसुरी - सी सभ्यता की/इस दहलीज़ पर/अब ऋषि की भूमिका बदल गई है। गन्तव्य पर मेनका के पहुंचने से पहले ही/उसका ध्यान बांटता-सा चिंघाड़ उठता/शातिर नपुंसकों का निरंकुश गिरोह/*पड़ावों के पत्ते' कविता की ये पंक्तियां भी दृष्टव्य हैं -

कंकड़ों ने चुभन भर दी है/पांव से सिर तक/हताश हो सड़क किनारे/रूकूं न तो क्या करूं/

नीहारिका जी देशकाल के हालातों से चिंतित हैं, यह चिंता जायज़ भी है। हर कविता ज्वलंत मुद्दे उठाने और चेहरों से मुखौटे हटाने के लिए शब्द-बाण चलाती प्रतीत होती है। सौदे में तब्दील होते लोकतंत्र, दमन-शोषण और लोगों के जीवन से खुशहाली छिन जाने का संत्रास साफ झलकता है। 'रक्त सने नख' और 'पुर्जा' कविताओं में देखिए उनकी यह पीड़ा संवेदना।

रक्त सने नख

वे तिलिस्मी खूंखार परिन्दे/आस्था के औंधे टोकरों पर बैठे/मौन खिलखिलाते हुए/रचते हैं बेहद ख़तरनाक इन्द्रजाल/धर्म की मीनारों पर दाना चुगते/दिखते हैं फिर गोल-गोल घूमते/अपेक्षाओं के आकाश में/नामुराद साजिशों के बारूदी गुब्बारे लिए/जीवन के मासूम सुखों में आग लगाते/

पुर्जा

सुनो लोकतंत्र/तुम्हारे अस्तित्व का संकट/अजब भ्रामक है/व्यक्ति हूँ मैं, जिसमें रूह भी है/जिसे सम्प्रदाय, जाति, लिंग, भाषा, स्थान से परे भी/बहुत कुछ झंझोड़ता है/

कवयित्री का मानना है 'प्रकृति' के अनेक घटकों की तरह कविता की धारा भी सहज है। वह अपनी सहजता में ही हमें विचलित करती है। उनकी यह सोच कविताओं में स्पष्ट नज़र आती है। कुल मिलाकर 'बोधि प्रकाशन', जयपुर से प्रकाशित नीहारिका जी का यह काव्य संग्रह स्वागत योग्य है।

- विष्णु शर्मा हितैषी

सर्जनात्मकता को सार्थक करती 86 ग़ज़लें

पिछले वर्ष मई में रामदयाल मेहरा का हिन्दी ग़ज़लों की सर्जनात्मक सार्थकता को प्रमाणित करने वाला 'आ पलकों पर पग धर आजा' संग्रह मुझे मिला। ज्यों-ज्यों

पृष्ठ : 86
मूल्य 100/-
प्रकाशक :
ऋषि प्रकाशन, कोटा

समय मिला एक-एक कर सभी गज़लों को पढ़ गया। इनमें पल-पल बदलते रिश्ते-नाते, परिवेश और मूल्यों की गूंज साफ सुनाई पड़ी। यह सब कुछ कवि-ग़ज़लकार का भोगा हुआ यथार्थ है। *झूठ-कपट सब उनके साथी, जिनको अपना भी कहता/सांकल सच के मुख जड़ी है, होशियार रहना/झूठे जग में बहुत मिले यूं, रहते मन भरमाने में/*

अधिकतर ग़ज़लों की अन्तर्वस्तु समकालीन परिवेश से सम्बन्धित है। रचनाकार का बचपन और उसके बाद भी ज़्यादातर समय गांव के घर, गलियारों और चौपाल में बीता है। शहर की भागती ज़िंदगी से जब भी मन उचटने लगा वे गांव के छपरैल घर और खेत की मेड़ पर छितराए पेड़ों की छांव याद करते हुए अपनी पहचान को सहेजने लगते हैं। *कहां गुम ईद-दिवाली की वो खुशियां/क्यों मातमी सी छा रही इस शहर में/एक छत के नीचे भी अनजान से हैं लोग/पहचान को पहचान तरसती इस शहर में/*

संग्रह के रचनाकार का मन प्रीत की संवेदना, वियोग की चेतना, जीवन में प्रेमत्व की सक्रियता तथा प्रभावशीलता के प्रति भी समर्पित है। *पाकर के स्पर्श तुम्हारा/सोया तन-मन जगा दुबारा/मानो या न मानो तुम बिन/है मुश्किल में गुज़र हमारा/* कुल मिलाकर इस संग्रह की ग़ज़लें पठनीय होने के साथ-साथ वर्तमान की सामाजिक-राजनैतिक और आर्थिक विडम्बनाओं व विसंगतियों पर खुलकर प्रहार करती हैं। रचनाकार को इन अच्छी और सोद्देश्य गज़लों के लिए बहुत बधाई!

- नंद किशोर

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. एस.के. लुहाड़िया
एम.डी.

डॉ. अतुल लुहाड़िया
एम.डी.

लुहाड़ियाज चेस्ट एण्ड एलर्जी क्लिनिक

टी.बी. एवं श्वास रोग निदान केन्द्र

परामर्श समय दोपहर 2 बजे से सायं 6 बजे तक

अपोइन्टमेंट लेने का समय

प्रातः 9.30 से सायं 6.30 बजे तक

रविवार अवकाश

165–ए ब्लॉक, चित्रकूटनगर, महिला पुलिस थाना के सामने,
सुखेर–प्रतापगनर बाईपास, उदयपुर–313001 (राज.)
09929297844, 08239488806, 0294–2441094

कृपया हर बार अपोइन्मेंट लेकर ही पधारें, भर्ती एवं आपातकालीन सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं।

THE STUDY
Udaipur
KNOWLEDGE IS POWER

PREMIER
CBSE SCHOOL

We'd love to tell you how

AMAZING

our school is but

this ad just isn't big

enough!

THE STUDY

Estd. 1982

SCIENCE | COMMERCE | ARTS

BADI, UDAIPUR

0294-2431825, 8233327996

www.facebook.com/thestudybadi/

ADMISSION OPEN
FOR 2019/20
GRADES 1-12

जीतो उदयपुर चेप्टर की नवीन कार्यकारिणी ने ली शपथ

उदयपुर। जैन इन्टरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन(जीतो) की उदयपुर चेप्टर की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह पिछले दिनों शौर्यगढ़ रिसोर्ट में हुआ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष शान्तिलाल मेहता ने आगामी 3 वर्ष के दौरान उदयपुर चेप्टर द्वारा किये जाने वाले कार्यों की जानकारी दी। वहीं नवगठित मुख्य सचिव सीए डॉ. महावीर चपलोत ने जीतो उदयपुर चेप्टर द्वारा अगले 2 वर्ष में जीतो अफोर्डेबल हाउसिंग प्रोजेक्ट, जीतो सर्किल, जीतो हेल्थकेयर, जीतो बेंक्वेट हॉल व जीतो हॉस्टल जैसे 5 बड़े प्रोजेक्ट पर कार्य कर सभी को सुविधायें उपलब्ध कराना बताया। राजस्थान जोन के चेयरमेन शांतिलाल मारू ने नवगठित यूथ विंग चेप्टर के चेयरमैन प्रतीक नाहर, पार्थ कर्णावट को शपथ दिलायी। जीतो अपेक्स अध्यक्ष गणपतराज चौधरी एवं मुख्य अतिथि शहर विधायक गुलाबचन्द कटारिया ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष शान्तिलाल मेहता एवं मुख्य सचिव सीए डॉ. महावीर चपलोत, वाइस चेयरमैन राजकुमार फत्तावत, किशोर चौकसी, राजकुमार सुराणा, पियूष मारू, सचिव राजकुमार बापना, देवेन्द्र कच्छारा, स्वस्तिक रांका, कोषाध्यक्ष पवन कोठारी, यंग विंग में प्रतीक नाहर, क्विन की चेयरपर्सन सोनाली मारू, लेडिज विंग में मधु मेहता को शपथ दिलायी। जीतो अपेक्स लेडीज विंग के चेयरमैन शर्मिला ओस्तवाल ने शहर में जीतो क्विन चेप्टर की घोषणा करते हुए प्रथम चेयरपर्सन के रूप में सोनाली मारू की नियुक्ति की। समारोह में जीतो अपेक्स के डायरेक्टर कमलेश सोजतिया, राजेन्द्र पोखरना, अशोक कोठारी, जेएटीएफआर राजस्थान जोन के चेयरमैन राजेन्द्र कुमार बरड़िया सहित अनेक नागरिक मौजूद थे। जोन सचिव अनीश धींग ने आभार ज्ञापित किया।

सिंधी प्रतिभाएं सम्मानित

उदयपुर। पूज्य जेकब आबाद सिन्धी पंचायत की ओर से पिछले दिनों आयोजित शिक्षा में प्रोत्साहन के लिए समाज के प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान समारोह समाजसेवी स्व. रूपकुमार खुराना को समर्पित रहा। समारोह में वर्ष 2018 में 10वीं व 12वीं, स्नातक, स्नातकोत्तर, चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट, कम्पनी सेक्रेट्री, पीएचडी, इंजीनियरिंग, मेडिकल, फार्मेसी डिग्री, एमबीए, एमएचआरएम, आरएएस व अन्य प्रोफेशनल डिग्री तथा मेरिट लिस्ट में नाम वाले विद्यार्थियों को पंचायत द्वारा सम्मानित किया गया। पंचायत अध्यक्ष प्रतापराय चुग ने बच्चों को पढ़ाई में योग्यता प्राप्त करने के लिए बधाई दी। शिक्षा प्रोत्साहन समिति के संयोजक डॉ. अशोक छादवानी ने बताया कि इस बार सम्मान प्राप्त करने वाले 55 बच्चों में 65 प्रतिशत लड़कियां हैं। राजस्थान सिन्धी अकादमी अध्यक्ष हरीश राजानी ने समाज और परिवार के उत्थान में शिक्षा की महत्ता पर प्रकाश डाला। पंचायत संरक्षक प्रभुदास पाहुजा ने समाजजनों को बच्चों को पढ़ाने में कोताही नहीं बरतने की सलाह दी। समाजसेवी भीमनदास तलरेजा ने शिक्षा के उत्थान में सहयोग का वादा किया। पंचायत महासचिव वाशदेव राजानी ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में स्व. खुराना के पुत्र राजीव व विकास खुराना, नरेश वलवानी, श्याम निचलानी, मोहनलाल माखीजा, अमर किंगरानी, खानचन्द मंगवानी, सुनील खत्री, भगवान छाबड़ा, अशोक पाहुजा, डॉ. मनोहरलाल कालरा, डॉ. किशोर पाहुजा, ओमप्रकाश गुरानी, अमरकान्त खुराना, किशोर झाम्बानी, पुरुषोत्तम तलरेजा, राजेश चुग, मनोहर मुखिया सहित शहर की सभी सिन्धी पंचायतों व युवा संगठनों के अध्यक्ष व पदाधिकारी उपस्थित थे।

'हकीकत बहियों' का विमोचन

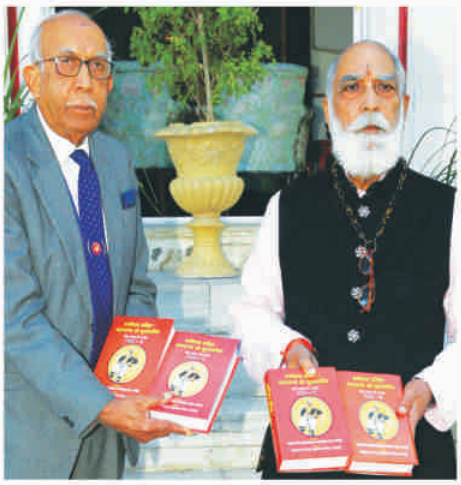

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट की ओर से नव प्रकाशित पुस्तक 'हकीकत बहिड़ा' महाराणा भूपाल सिंह (ई.स. 1930 से 1955) का विमोचन महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्री अरविन्द सिंह मेवाड़ ने शम्भू निवास में किया। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भूपेन्द्र सिंह आउवा ने बताया कि महाराणा भूपालसिंह के बहिड़ों पर महाराणा मेवाड़ अनुसंधान केन्द्र और महाराणपा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट 4 साल से कार्य कर रहा था। उल्लेखनीय है कि श्री मेवाड़ की पहल पर फाउण्डेशन ने ऐसे कई ग्रंथ प्रकाशित किए हैं जो मेवाड़ के इतिहास और गरिमा पर फोकस करते हैं।

मनमोहक एवं सुगन्धित खुशबू जो आपके जीवन में लाये खुशहाली

250 Products Available

चेतक घोड़ा CHETAK HORSE ®

ISO 9001:2008 CERTIFIED

Archana®
Agarbatti

EXPORT QUALITY Since 1947 AGARBATTI

Registered Office :
ARCHANA AGARBATTI
NAVBHARAT INDUSTRIES

N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Choraha,
UDAIPUR - 313001 (Rajasthan)
Customer Care Number : 0294-2492161, 2490899

E-mail : sales@archanaagarbatti.com
Website : www.archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

कांग्रेस की हैट्रिक, भाजपा को झटका

मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में हार से भाजपा की चुनावी राह नहीं रही आसान, 2019 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को करना पड़ेगा चुनौतियों से सामना

– सुनील पंडित

2019 में होने वाले फाइनल मुकाबले (लोकसभा चुनाव) से पहले सेमीफाइनल मुकाबले (विधानसभा चुनाव) में बीजेपी को जबरदस्त झटका लगा। जबकि कांग्रेस का वनवास खत्म हुआ। कांग्रेस के लिए पांच राज्यों में से तीन के नतीजे संजीवनी साबित हुए। उसकी झोली में राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ प्रदेश आ गए। जबकि तेलंगाना और मिजोरम में उसे बड़ी हार का सामना करना पड़ा। हिंदी पट्टी के तीन महत्वपूर्ण राज्यों से भाजपा को बेदखल कर कांग्रेस राजनैतिक वनवास से लौट आई है। इस जीत से कांग्रेस के उभार के साथ पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी का राजनैतिक कद भी बढ़ गया है। नतीजतन वह 2019 के आम चुनावों से पहले ही वैकल्पिक नेता के तौर पर उभर गए हैं। हालांकि भाजपा का मानना है कि यदि लोकसभा चुनाव 'मोदी बनाम राहुल' के समीकरणों पर होते हैं तो पार्टी को चुनावी फायदा तय है। ये जीत 2019 से पहले बीजेपी के लिए खतरे की घंटी बन गई है। इससे गैर बीजेपी पार्टियों में कांग्रेस का दबदबा बढ़ा है। हालांकि मिजोरम में हार से पूर्वोत्तर में कांग्रेस का सफाया हो गया। लेकिन जहां-जहां भी महागठबंधन हुए या 2019 के लिए महागठबंधन होगा उसमें इस बार के विधानसभा चुनाव में मिली जीत मजबूत पक्ष बनकर सामने होगी। महागठबंधन के नेता के रूप में अब राहुल गांधी की दावेदारी मजबूत हो चुकी है। वहीं भाजपा में इन चुनावों की वजह से सबसे बड़ा झटका अमित शाह को लगता दिख रहा है। अब पार्टी के भीतर और आरएसएस में उनके विरोधियों को ताकत मिलेगी, वे शीर्ष पर बदलाव के लिए लॉबिंग कर सकते हैं। हालांकि 2019 के लोकसभा चुनाव से पूर्व ऐसा करना भाजपा के लिए आत्मघाती भी साबित हो सकता है।

भगवा को लगा ग्रहण

कांग्रेस को मिली इस जीत के कई मायने निकाले जा सकते हैं और अलग-अलग मतलब। इस जीत का सबसे सार्थक संदेश विपक्षी दलों के बीच यह रहा कि भाजपा अजेय नहीं है, उसे हराया जा सकता है। भाजपा के 3 भगवा किलों (मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़) पर कांग्रेस की चढ़ाई का मतलब ये भी निकलता है कि पीएम नरेंद्र मोदी की 2014 की लहर धीमी होने लगी है। ऐसे में मोदी-शाह की जोड़ी व उनके चुनावी प्रबंधन को चुनौती दी जा सकती है। 2014 के लोकसभा चुनावों के बाद कांग्रेस लगातार विधानसभा चुनाव हार रही थी। भाजपा एक तरफ अपने 'कांग्रेस मुक्त भारत' के अभियान की ओर बढ़ती जा रही थी तो दूसरी ओर देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस के पंजे से एक-एक कर हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, असम, महाराष्ट्र और पूर्वोत्तर के कई राज्य निकल रहे थे। हार और निराशा की गर्त से पार्टी को उबारना राहुल गांधी के लिए एक बड़ी चुनौती थी। जिसे उन्होंने स्वीकार कर हारते रहने वाली कांग्रेस को जीतने वाली पार्टी की पहचान दी। उन्होंने कांग्रेस और शिथिल पड़े कार्यकर्ताओं में उत्साह, जोश और उमंग का संचार किया। उन्होंने यह भी साबित किया कि सोनिया गांधी और पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का उन्हें पार्टी की कमान सौंपने का निर्णय सौ टका सही था।

राजस्थान : अनुभव और उत्साह का समन्वय

बीजेपी राजस्थान में इतिहास को बदल कर दोबारा सरकार बनाने के सपने देख रही थी। लेकिन जनता ने उसे दरकिनार करते हुए सत्ता की चाबी कांग्रेस के हाथ सौंप दी। बीजेपी ने धुआंधार प्रचार किया। पीएम मोदी, अमित शाह, योगी आदित्यनाथ, राजनाथ सिंह समेत कई बड़े चेहरों ने राजस्थान में वोटरों को लुभाने की कोशिश की लेकिन विफल रहे। दूसरी ओर अनुभवी अशोक गहलोत और युवा प्रदेश अध्यक्ष सचिन की जोड़ी ने भाजपा को सत्ता से बेदखल कर दिया। 17 दिसंबर को अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री व प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सचिन पायलट ने उप मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। जयपुर के अल्बर्ट हॉल परिसर में हुए शपथ ग्रहण समारोह में कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के साथ ही कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के महागठबंधन में शामिल नेता आए। 24 दिसम्बर को गहलोत के मंत्रीमंडल में शामिल 13 कैबिनेट और 10 राज्यमंत्रियों ने शपथ ली। इनमें 18 विधायक पहली बार मंत्री बने। एक महिला और एक मुस्लिम विधायक को भी मौका मिला।

कैबिनेट मंत्री : बीडी कल्ला (बीकानेर पश्चिम), शांति धारीवाल (कोटा उत्तर), परसादी लाल मीणा (लालसोट), मास्टर भंवरलाल मेघवाल (सुजानगढ़), लालचंद कटारिया (झोटवाड़ा), डॉ. रघु शर्मा (केकड़ी), प्रमोद जैन भाया (अंता), विश्वेंद्र सिंह (डीग-कुम्हेर), हरीश चौधरी (बायतू), रमेश मीणा (सपोटरा), उदयलाल आंजना (निंबाहेड़ा), प्रताप सिंह खाचरियावास (सिविल लाइंस) और सालेह मोहम्मद (पोकरण) को मंत्रिमंडल में स्थान दिया गया।

राज्यमंत्री और स्वतंत्र प्रभार : गोविंद सिंह डोटासरा (लक्ष्मणगढ़-सीकर), ममता भूपेश (सिकराय), अर्जुन सिंह बामनिया (बांसवाड़ा), भंवर सिंह भाटी (कोलायत), सुखराम विश्नोई (सांचौर), अशोक चांदना (हिंडौली), टीकाराम जूली (अलवर ग्रामीण), भजनलाल जाटव (वैर), राजेन्द्र सिंह यादव (कोटपूतली) गठबंधन दल आरएलडी के सुभाष गर्ग (भरतपुर) को राज्यमंत्री या स्वतंत्र प्रभार वाला मंत्री बनाया गया है।

पहली बार बने मंत्री : रघु शर्मा, लाल चंद कटारिया, विश्वेंद्र सिंह, हरीश चौधरी, रमेश मीणा, प्रताप सिंह, उदयलाल आंजना, सालेह मोहम्मद, गोविंद डोटासरा, ममता भूपेश, अर्जुन बामनिया, भंवर सिंह, सुखराम विश्नोई, अशोक चांदना, टीकाराम जूली, भजनलाल, राजेन्द्र यादव, सुभाष गर्ग।

मध्य प्रदेश : 'कमल' नए नाथ

राज्य में 15 साल से राज करने वाली भाजपा को सत्ता से बेदखल करने के बाद कांग्रेस के सामने मुख्य चुनौती मुख्यमंत्री के नाम की घोषणा को लेकर थी। मुख्यमंत्री के दो दावेदार- कमलनाथ और ज्योतिरादित्य सिंधिया थे। सीएम के नाम की घोषणा में दो दिन कशमकश रही लेकिन आलाकमान ने अंतिम समय में कमलनाथ पर मोहर लगाई। 18वें मुख्यमंत्री के रूप में 17 दिसंबर को कमलनाथ को राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने शपथ दिलाई। इस दौरान कमलनाथ और पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने एक-दूसरे का हाथ पकडकर हवा में उठाया तो सभी दंग रह गए। फिर तो शिवराज सिंह चौहान के बगल में खड़े ज्योतिरादित्य सिंधिया को भी शिवराज का हाथ अपने हाथ में लेकर उठाना पड़ा।

छत्तीसगढ़ : बघेल ने मारी बाजी

पंद्रह साल के लंबे इंतजार के बाद कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ के सियासी किले को फतह किया। बीजेपी के सबसे मजबूत गढ़ में से एक माने जाने वाले छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने सेंधमारी करते हुए धमाकेदार अकल्पनीय जीत हासिल की। कांग्रेस ने राज्य में उम्मीद से बेहतरीन प्रदर्शन किया। पिछले पंद्रह सालों से छत्तीसगढ़ में रमन का राज था, जिसे कांग्रेस ने खत्म कर दिया। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस को सत्ता में लाने के लिए अहम भूमिका निभाने वाले भूपेश बघेल को सीएम बनाया गया। उन्होंने 17 दिसंबर को शपथ ली। उनके साथ मुख्यमंत्री पद के अन्य दो दावेदारों ने मंत्री के रूप में टीएस सिंह देव और ताम्रध्वज साहू ने भी शपथ ली। ये दोनों सीएम की रेस में बघेल को टक्कर दे रहे थे लेकिन बघेल आगे निकल गए। शपथ ग्रहण समारोह में पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह भी मौजूद थे।

मिजोरम : बागी बना सीएम

राज्य में सत्ता पर कब्जा जमाने के लिए बीजेपी, कांग्रेस और एमएनएफ ने धुआंधार प्रचार किया। लेकिन जनता ने बीजेपी और कांग्रेस दोनों को नकारते हुए एमएनएफ पर भरोसा जताया। मिजो नेशनल फ्रंट (एमएनएफ) के नेता जोरामथांगा को 15 दिसंबर को राज्यपाल के. राजशेखरन ने मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। एमएनएफ अध्यक्ष ने मिजो भाषा में शपथ ली। जोरामथंगा दो बार मिजोरम के मुख्यमंत्री रहे हैं। वह पूर्व में भूमिगत नेता और एमएनएफ के नेता लालडेंगा के करीबी रहे हैं। जोरामथंगा (74) उस समय भूमिगत संगठन रहे एमएनएफ में शामिल हुए थे जब वह इम्फाल के डी एम कॉलेज से कला में स्नातक की डिग्री का इंतजार कर रहे थे।

तेलंगाना : केसीआर बने किंग

तेलंगाना की जनता ने एक बार फिर टीआरएस पर भरोसा जताया है। राज्य की जनता ने टीआरएस का दिल खोल कर समर्थन किया। टीआरएस ने राज्य में शानदार जीत दर्ज की है जबकि कांग्रेस और बीजेपी तो टीआरएस के आस पास भी नजर नहीं आए। तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) के प्रमुख के. चंद्रशेखर राव ने 13 दिसंबर को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उनका लगातार दूसरा कार्यकाल है। साल 2014 के चुनाव में टीआरएस ने 119 में से 63 सीटें जीती थीं। जबकि इस बार टीआरएस ने 88 सीटें जीती।

मामूली नहीं है, खांसी-जुकाम का रोग

सर्दी का मौसम है। कई तरह के संक्रामक रोग शरीर में डेरा डालने लगते हैं। इस मौसम में खांसी-जुकाम किसी को भी हो सकता है, लेकिन इसे गंभीरता से नहीं लेने की अक्सर हम गलती कर बैठते हैं और समस्या बहुत ज्यादा गंभीर भी हो जाती है। खाँसी अपने आप में कोई बीमारी नहीं है, लेकिन यह शरीर के अंदर पनप रही या पनपने की कोशिश कर रही दूसरी बीमारियों का एक बड़ा लक्षण जरूर हो सकती है। खांसी अगर साधारण है तो आम इलाज से ठीक हो जाती है, पर अगर लंबे समय तक खांसी बनी रहे तो कई बार यह किसी गंभीर बीमारी को निमंत्रण भी हो सकती है।

– डॉ. दिलखुश सेठ

सर्दी-जुकाम वैसे तो साधारण-सी समस्या है, लेकिन कई बार इसके गंभीर परिणाम भी होते हैं। मौसम परिवर्तन पर वातावरण में आए बदलाव को जब हमारा शरीर झेल नहीं पाता है, तो कई तरह के मौसमी रोग होते हैं। इनमें खांसी-जुकाम प्रमुख हैं। कई लोग इससे छुटकारा पाने के लिए एलोपैथिक दवाएं ले लेते हैं, जिनसे कुछ समय के लिए आराम मिलता है, लेकिन जैसे ही दवा का असर खत्म होता है, वे फिर से इसकी गिरफ्त में आ जाते हैं। बदलते मौसम की इन बीमारियों को नजरअंदाज हरगिज़ न करें।

खांसी, फेफड़ों, सांस की नलियों और गले में संक्रमण या किसी कमी की वजह से होती है। इसे शरीर का एक तरह का सुरक्षा तंत्र या उपाय भी कह सकते हैं। खांसी इस बात की ओर इशारा है कि शरीर के अंदर कोई बीमारी है। खांसी के माध्यम से हमारा शरीर बीमारियों के जीवाणुओं और कीटाणुओं से मुक्ति पाने की कोशिश करता है। इसमें हमें थोड़ी तकलीफ तो जरूर होती है, क्योंकि मांसपेशियों व शरीर के बाकी अंगों पर जोर पड़ता है। असल में उस समय शरीर अंदर ही अंदर अपनी रक्षा करने की कोशिश कर रहा होता है। हालांकि कई बार खांसी दूसरों तक बीमारी के कीटाणु या जीवाणु फैलाने का कारण भी बन जाती है।

संक्रामक बीमारी

बदलते मौसम में सर्दी-जुकाम की समस्या हवा में फैले कई वायरस तथा बैक्टीरिया के संक्रमण के कारण होती है। जब शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम होने लगती है, तब सर्दी-जुकाम जैसी समस्या पहले सिर उठाती है। धूल, धुंआ, प्रदूषण, एलर्जी, ठंडे से गरम या गरम से एकदम से ठंडे में जाना, धूप से आने के बाद ठंडी चीजें खा लेना आदि इसके प्रमुख कारण होते हैं।

राहत के उपाय

जब घर से बाहर जाएं, तो मास्क जरूर पहनें। नाक के अंदर की सतह पर सरसों का तेल लगाएं। जिन्हें पहले सर्दी-जुकाम की समस्या हो, उनसे आप तब तक के लिए थोड़ी दूर बना कर रखें, जब तक उनकी तबियत ठीक नहीं हो जाती। आपसे किसी और को ये समस्या ना हो, इसके लिए छींकते समय अपने मुंह पर रूमाल जरूर रखें। धूप से आने के तुरंत बाद ठंडा न पिएं और न ही किसी ठंडी चीज का सेवन करें।

खान-पान व परहेज़

खांसी-जुकाम होने पर हल्का, सुपाच्य और पौष्टिक भोजन करें। भोजन में तरल पदार्थों की मात्रा अधिक रखें। अगर घर में किसी को सर्दी-जुकाम हो तो तो खाने में बड़ी इलायची, लौंग, काली मिर्च, दालचीनी, तेजपत्ता और अदरक जैसे गरम मसालों का इस्तेमाल जरूर करें। गर्म चीजों का सेवन करें और गुनगुना पानी पिएं। कोल्ड ड्रिंक आदि का सेवन न करें।

ये भी करें

- रात में सोते समय हल्के गुनगुने दूध में एक चम्मच हल्दी मिला कर पिएं, सर्दी-जुकाम में तेजी से लाभ होगा।
- सौंठ, छोटी पीपर तथा काली मिर्च को अच्छे से पीस कर इसका पाउडर तैयार करें और इसे शहद में मिला कर चाटें, आराम मिलेगा।
- गर्म पानी, वेजिटेबल सूप के सेवन से लाभ होगा।
- गर्म पानी से सुबह-शाम गरारे करने से आराम मिलेगा।

'कमल' का राज खत्म नाथ का शुरू

मध्यप्रदेश में सात महीने पहले कांग्रेस की बागडोर संभालने वाले कमलनाथ ने 15 साल बाद कांग्रेस का किया वनवास खत्म

मध्यप्रदेश में 15 साल से वनवास भुगत रही कांग्रेस को सात महीने पहले प्रभार संभालने वाले कमलनाथ ने सत्ता में वापसी करवा दी। कमलनाथ और ज्योतिरादित्य सिंधिया की अनुभवी व उत्साही जोड़ी ने भाजपा को जिस तरह से चित किया, शायद उसकी कल्पना किसी ने भी नहीं की। परिणाम के बाद सीएम की घोषणा को लेकर दो दिन लग गए। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी, पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और यहां तक कि प्रियंका गांधी को भी सलाह में शामिल कर युवा ज्योतिरादित्य सिंधिया को धैर्य का संदेश दे कर कमलनाथ को सीएम बना दिया। माना जा रहा है कि यहां कांग्रेस में आपसी गुटबाजी चरम पर थी। कमलनाथ का गुटबाजी से परे होने का तमगा ही उन्हें सीएम की कुर्सी तक लेकर गया। उन्हें सभी गुटों को साथ लेकर चलने वाला अनुभवी और मंजा हुआ नेता माना जाता है। उनके नाम छिंदवाड़ा लोकसभा सीट से 9 बार जीत दर्ज करने का रिकॉर्ड भी है। एमपी की राजनीति का चाणक्य माने जाने वाले पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह का भी समर्थन मिलने से सत्ता के शीर्ष पर पहुंचने की कमलनाथ की राह आसान हो गई। हालांकि कांटे के मुकाबले में कांग्रेस ने भाजपा से मात्र 5 सीटें ही अधिक पाई हैं लेकिन राज्य में उसका जनाधार बढ़ा है। यहां कांग्रेस बसपा, सपा और निर्दलीय विधायकों के सहारे सत्ता के शिखर पर पहुंचने में कामयाब रही। राज्य में ऐसा पहली बार हुआ है जब किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। पिछली बार 166 सीटें जीतने वाली भाजपा को 109 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा जबकि कांग्रेस ने 114 सीटों पर जीत दर्ज की। भाजपा के सीएम उम्मीदवार शिवराज सिंह चौहान बुदनी सीट से विजयी हुए लेकिन उनके मंत्रिमंडल के एक दर्जन सदस्य हार गए। ये चुनाव इसलिए भी अहम थे क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी दोनों की ही प्रतिष्ठा दांव पर थी। मोदी ने मप्र के अलग-अलग क्षेत्रों में करीब दस रैलियां की थीं। जिनकी मदद से भाजपा 137 सीटों की उम्मीद में थी। लेकिन सिर्फ 76 सीटों पर ही मोदी का जादू चल पाया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने करीब 30 सीटों पर प्रचार किया। जिनमें से 18 सीटें ही उसकी झोली में आई जबकि 12 पर कांग्रेस व बसपा विजयी रही। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने 45 सीटों पर प्रचार कर 24 को अपनी पार्टी के खाते में डाला। दूसरी ओर आरक्षण को मुद्दा बनाकर चुनाव मैदान में उतरी सपाक्स पार्टी को जनता ने सिरे से नकार दिया। पार्टी ने 109 सीटों पर प्रत्याशी उतारे थे, जो जीतना तो दूर वोट भी नहीं काट पाए। अधिकांश की जमानत जब्त हो गई। माना जा रहा है कि कमलनाथ का मुख्यमंत्री बनना 2019 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस के लिए फायदे का सौदा साबित हो सकता है।

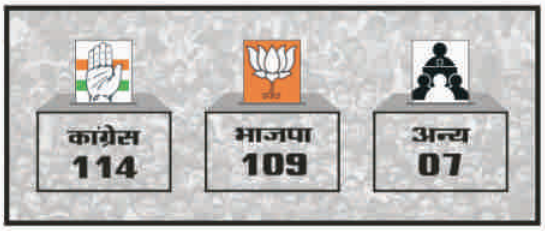

तिकड़ी का जलवा बरकरार

कमलनाथ : कांग्रेस की जीत के सबसे बड़े नायक बनकर उभरे। मतदान के बाद से ही सबसे ज्यादा उत्साह में दिखे। कुशल प्रबंधक माने जाने वाले कमलनाथ ने बिखरी हुई पार्टी को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। हर फैसले में उनकी राय सर्वोपरि रही। उनके जिले छिंदवाड़ा में 7 में से 6 सीटों पर कांग्रेस को जीत का श्रेय उनको ही जाता है। टिकट वितरण में न सिर्फ उनका पूरा दखल रहा बल्कि सभी बड़े नेताओं को भरोसे में रखकर उनकी पसंद को भी तवज्जो दी।

दिग्विजय सिंह : दिग्विजय सिंह को परदे के पीछे रखने पर भाजपा ने भले ही बार-बार कांग्रेस पर हमले किए लेकिन वे अपना काम करते रहे। समन्वय समिति के अध्यक्ष बनाए जाने के बाद उन्होंने पूरे प्रदेश का दौरा कर पार्टी में जान फूंकने का काम किया। इस दौरान जिला स्तर पर गुटों में बंटी कांग्रेस को

एक करने का काम उन्होंने बखूबी किया। बागियों को मनाकर लाए और कांग्रेस की जीत के रास्ते खोले।

ज्योतिरादित्य सिंधिया : सिंधिया राजघराने से ताल्लुक रखने वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया युवाओं के बीच कांग्रेस का सबसे लोकप्रिय चेहरा बनकर उभरे। उन्होंने कांग्रेस की तरफ से चुनाव प्रचार में 122 सभाएं ली। ग्वालियर-चंबल इलाकों में भी उन्होंने कांग्रेस को अच्छी खासी बढ़त दिलाई। इस क्षेत्र में दबंग प्रत्याशियों को हार का सामना करना पड़ा। इसमें सिंधिया की अहम भूमिका रही क्योंकि यहां कांग्रेस ने उनकी राय से टिकट बांटे।

नाथ ने निभाया पहला वचन

प्रदेश के नेताओं की गुटबाजी से निपटने के बाद अब कमलनाथ सरकार को अपने सहयोगी दलों को साथ लेकर चलना सबसे बड़ी चुनौती होगी। किसानों की ऋण माफी का मामला भी कमलनाथ के लिए किसी चुनौती से कम नहीं था लेकिन उन्होंने पहले ही दिन किसानों के ऋण माफ कर दिए। राहुल गांधी ने साफ-साफ कहा था कि सरकार बनने के दस दिन के अंदर ही किसानों का कर्ज माफ कर दिया जाएगा। मध्य प्रदेश में 62 लाख किसानों पर करीब 70 हजार करोड़ रुपए का कर्ज था। प्रदेश में लोकसभा की 29 सीटें हैं और चार महीने बाद ही लोकसभा का चुनाव हो सकता है। ऐसे में सभी गुटों को एक साथ करके ज्यादा से ज्यादा सीटें जीतकर अपनी पहली परीक्षा पास करना कमलनाथ की चुनौती होगी। 2014 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को प्रदेश की 29 सीटों में से मात्र दो सीटें ही मिली थीं। लेकिन जिस हिसाब से कांग्रेस ने यहां अभी के विधानसभा चुनावों में शानदार प्रदर्शन किया उसके अनुसार 2019 के लोकसभा चुनाव में दस सीटों के इजाफे के साथ 12 सीटों पर कब्जा कर सकती है। ऐसे में कमलनाथ को न सिर्फ इस प्रदर्शन को बरकरार रखने की चुनौती होगी बल्कि इससे ज्यादा सीटें जीतने का भी दबाव होगा। यानी, मध्यप्रदेश के नए मुख्यमंत्री कमलनाथ के लिए यह ताज चुनौतियों से भरा होगा। जिनसे पार पाने के लिए उन्हें कठिन परिश्रम करना होगा।

- मदन पटेल

कर्जमाफी बना जीत का फॉर्मूला

देश में सबसे पहले किसानों की कर्ज माफी पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह ने की थी। 28 साल के बाद भी कर्ज माफी चुनावी जीत का सबसे हिट फॉर्मूला बन गया है। हाल ही में इस वादे ने कांग्रेस को तीन राज्यों की सत्ता में वापसी करा दी। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्रियों ने शपथ लेने के चंद घंटे के अंदर ही कर्ज माफी का ऐलान कर दिया। राजस्थान की गहलोत सरकार ने भी इस ओर सशक्त कदम उठाये। किसानों के लिए पहली कर्ज माफी 1990 में वीपी सिंह सरकार ने की थी। उन्होंने देश के किसानों का 10 हजार करोड़ रुपए का कर्ज माफ किया था। इसके बाद से समय-समय पर सरकारें किसानों की कर्ज माफ करती रही। कर्जमाफी के वादे पर मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सत्ता की सीढ़ियाके चढ़ने वाली कांग्रेस को देखकर असम की बीजेपी सरकार ने भी कर्जमाफी का ऐलान किया है। इससे पहले यूपी की योगी सरकार भी इस रास्ते पर चल चुकी है। माना जा रहा है कि आने वाले लोकसभा चुनावों में कर्जमाफी एक बड़ा मुद्दा रहेगा।

युवाओं का आदर्शः स्वामी विवेकानंद

एक युवा सन्यासी के रूप में भारतीय संस्कृति की सुवास को विदेशों में फैलाने का श्रेय किसी व्यक्ति को जाता है तो वे हैं स्वामी विवेकानंद। उनके साहित्य, दर्शन और ज्ञान की खूशबू पर संपूर्ण जनमानस आज भी सम्मोहित है। वे युवा जगत को एक नई और सच्ची राह दिखाने में जितने सफल हुए उतना ही शायद कोई हुआ हो। उनके रहने का ढंग, बोलने की कला और जिंदगी जीने की शैली आज भी युवाओं के लिए आदर्श मानी जाती है। कन्याकुमारी में निर्मित उनका स्मारक दुनियाभर के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वे कहते थे कि संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है असंभव से भी आगे निकल जाना। उनका मानना था कि लक्ष्य को पाने के लिए तब तक कोशिश करते रहना चाहिए जब तक लक्ष्य हासिल न हो जाए। वे कहते थे 'उठो! जागो, और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य ना प्राप्त हो।' स्वामी विवेकानंद ने अपने आध्यात्मिक चिंतन और दर्शन से न सिर्फ लोगों को प्रेरणा दी बल्कि भारत को पूरे विश्व में गौरवान्वित भी किया। उनके बचपन का नाम नरेंद्रनाथ विश्वनाथ दत्त था। उन्हें प्यार से नरेंद्र या नरेन बुलाया जाता था। मठवासी बनने के बाद उन्हें स्वामी विवेकानंद नाम मिला। उनका जन्म कलकत्ता में 12 जनवरी 1863 को पिता विश्वनाथ दत्त और भुवनेश्वरी देवी के घर हुआ। 1884 में बी. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले स्वामी विवेकानंद का जीवन गुरु रामकृष्ण परमहंस से मिलने के बाद बदला। वे हमेशा से दयालु स्वभाव के थे जो न सिर्फ मानव बल्कि जीव-जंतु को भी प्रेम भावना से देखते थे। उनका मानना था कि प्रेम, भाई-चारे और सद्भाव से जिंदगी आसानी से गुजारी जा सकती है और जीवन के हर संघर्ष से निपटा जा सकता है। युवावस्था से ही उनमें आध्यात्मिकता के प्रति रूचि थी, वे हमेशा भगवान की तस्वीरों के सामने ध्यान लगाकर साधना करते थे। साधुओं और सन्यासियों की बातें उन्हें हमेशा प्रेरित करती रहीं। इन्हीं से प्रेरित होकर नरेन्द्र नाथ दुनियाभर में ध्यान, अध्यात्म, राष्ट्रवाद हिन्दू धर्म, और संस्कृति के वाहक बने और स्वामी विवेकानंद के रूप में प्रसिद्ध हो गए। उनकी दर्शन, धर्म, इतिहास और समाजिक विज्ञान जैसे विषयों में काफी रूचि थी। वेद उपनिषद, रामायण, गीता और हिन्दू शास्त्र वे काफी उत्साह के साथ पढ़ते थे। यही वजह है कि वे ग्रन्थों और शास्त्रों के पूर्ण ज्ञाता थे। उन्होंने हर्बट स्पेंसर की किताब 'एजुकेशन' का बंगाली में अनुवाद किया। वे स्पेंसर से काफी प्रभावित थे। जब वे पश्चिमी दर्शन शास्त्रों का अभ्यास कर रहे थे तब उन्होंने संस्कृत ग्रंथों और बंगाली साहित्य को भी पढ़ा। वे बचपन से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे इसलिए उनको श्रुतिधर भी कहा जाता है। विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस से इतने प्रभावित हुए कि उनके मन में गुरु रूप में उनके प्रति कर्तव्यनिष्ठा और श्रद्धा बढ़ती ही गई। 1885 में रामकृष्ण परमहंस कैंसर से पीड़ित हुए तो विवेकानंद ने उनके अंतिम समय तक सेवा में कोई कसर नहीं रखी। इस दौरान गुरु और शिष्य के बीच का रिश्ता और मजबूत होता चला गया। रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के बाद नरेन्द्र ने वराहनगर में रामकृष्ण संघ की स्थापना की। हालांकि बाद में इसका नाम रामकृष्ण मठ कर दिया गया। रामकृष्ण मठ की स्थापना के बाद उन्होंने ब्रह्मचर्य और त्याग का व्रत लिया और वे नरेन्द्र से स्वामी विवेकानन्द हो गए।

स्वामीजी का भारत भ्रमण

महज 25 साल की उम्र में ही स्वामी विवेकानंद ने गेरुआ वस्त्र पहन लिए और पूरे भारत वर्ष की पैदल यात्रा के लिए निकल गए। इस दौरान वे अयोध्या, वाराणसी, आगरा, वृन्दावन, अलवर समेत कई जगहों पर पहुंचे। राजाओं के महल से लेकर गरीब की झोपड़ी तक में ठहरे। जातिगत भेदभाव जैसी कुरीतियों का पता चलने पर उन्होंने उसे मिटाने की कोशिश भी की। 23 दिसम्बर 1892 को विवेकानंद कन्याकुमारी पहुंचे, जहां वे 3 दिन तक गंभीर समाधि में रहे। यहां से वापस लौटकर वे राजस्थान के आबू रोड में अपने गुरुभाई स्वामी ब्रह्मानंद और स्वामी तुर्यानंद से मिले। बाद में उन्होंने अमेरिका जाने का फैसला लिया। स्वामी जी की अमेरिका यात्रा और शिकागो भाषण आज भी इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों से लिखा हुआ है। उनकी जन्म तिथि हर वर्ष 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई जाती है।

स्वामी विवेकानंद की जिंदगी के रहस्य

परोपकार

उनका मानना था कि परोपकार की भावना समाज के उत्थान में मदद करती है। इसलिए सभी को इसमें अपना योगदान देना चाहिए। वे कहते थे कि देने का आनंद पाने के आनंद से बड़ा होता है।

कर्तव्यनिष्ठा

उनका ये भी मानना था कि जो भी काम करो पूरी शिद्दत से अन्यथा मत करो। वे खुद भी जो भी काम करते थे पूरी कर्तव्यनिष्ठा से करते थे और पूरा ध्यान उसी में लगाते थे। बाद में इसी गुण ने उन्हें महान बनाया।

लक्ष्य का निर्धारण

वे कहते थे कि सफलता पाने के लिए लक्ष्य का होना आवश्यक है क्योंकि एक निश्चित लक्ष्य के निर्धारण से ही आप अपनी मंजिल तक पहुंच सकते हैं।

सादा जीवन

वे सादा जीवन जीने में विश्वास रखते थे। वे भौतिक साधनों से दूर रहने पर जोर देते थे। उनका मानना था कि भौतिकवादी सोच और आनंद इंसान को लालची बनाता है।

डर का हिम्मत से सामना करो

वे कहते थे कि डर से भागने के बजाए उसका सामना करना चाहिए। क्योंकि अगर इंसान हिम्मत हारकर पीछे हो जाता है तो निश्चित ही असफलता हाथ लगती है। जो इंसान इसका डटकर सामना करता है तो डर भी उससे डर जाता है।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

फोन :- 0294-2429053

कन्हैयालाल जैन
राकेश जैन (बंटी)

राजस्थान मेडिकल स्टोर

महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय के सामने, उदयपुर

हाथ से निकला 'पूर्वोत्तर' का आखरी किला

चुनाव से पूर्व टिकट बंटवारे की बात हो चाहे एक्जिट पोल पर होने वाली बहस। इन सब से कोसों दूर रहा ईसाई बहुल राज्य मिजोरम। यहां तीसरी बार अपना गढ़ बचाए रखना कांग्रेस के लिए बड़ी चुनौती था। लेकिन पूर्वोत्तर का यह आखरी किला भी उसके हाथ से निकल गया। 40 सीटों वाली विधान सभा के लिए नवंबर 2018 में 80.15 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। जबकि पिछले विधानसभा चुनाव में यहां 83.04 प्रतिशत वोट पड़े थे। नार्थ-ईस्ट में एकमात्र राज्य था जहां कांग्रेस की सरकार थी। दो विधानसभा क्षेत्र सेरछिप और चंपाई से चुनाव लड़ने वाले कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं मुख्यमंत्री लाल थनहावला भी हार गए। राज्य में बीते 10 सालों (2008-2018) से वे ही मुख्यमंत्री थे। उनसे पहले एमएनएफ के पु. जोरमथंगा ने 10 साल (1998-2008) सरकार चलाई थी। 1987 में विधायक चुन कर आए जोरमथंगा पहली बार ही राज्य में शिक्षा एवं वित्त मंत्री बने थे। 2008 में उनके दल की पराजय के साथ सरकार को बाहर होना पड़ा और कांग्रेस सत्ता मं आई। लाल थनहावला 1989 से 1998 तक मुख्यमंत्री रहे थे। इस तरह से बीते 6 कार्यकालों के 28 वर्षों में वहां दो ही व्यक्ति सत्ता के मुखिया रहे हैं। मिजोरम कार्यकालों के 28 वर्षों में वहां दो ही व्यक्ति सत्ता के मुखिया रहे हैं। मिजोरम को 1987 में पूर्ण राज्य का दर्जा मिला था और उसी साल हुए पहले विधानसभा चुनाव में एमएनएफ ने सरकार बनाई थी। पूर्वोत्तर के इस राज्य में छोटे-मोटे क्षेत्रीय दल हमेशा से रहे हैं लेकिन मुख्य मुकाबला कांग्रेस और एमएनएफ के बीच ही होता रहा है। कांग्रेस की अगुवाई में 1993 में यहां पहली सरकार बनी थी जिसने पांच साल का कार्यकाल पूर्ण किया। करीब 87 प्रतिशत ईसाई आबादी वाले मिजोरम पर चर्च और ईसाई धार्मिक संगठनों का बहुत असर माना जाता है। पूर्वोत्तर में यही एक ऐसा प्रदेश है जहां शराबबंदी हमेशा से एक बड़ा मुद्दा रहा है। यहां 1991 से शराबबंदी थी लेकिन कांग्रेस सरकार ने 2015 में इसे खत्म कर दिया। एमएनएफ ने चुनाव में इसे एक बड़ा मुद्दा बनाया। सरकार बनने पर शराबबंदी लागू करने का वादा एक बड़े धार्मिक तबके को रिझाने में सफल रहा। हालांकि शराबबंदी ही अकेला मसला नहीं था जिसने यहां एमएनएफ को बढ़त दिलाई। कांग्रेस सरकार के दौरान सडक़ों की खस्ताहालत भी यहां एक बड़ा चुनावी मुद्दा बना। एमएनएफ ने इस मुद्दे को चुनावों में जमकर भुनाया। इसके अलावा रोजगार और विकास से जुड़े अन्य परंपरागत मुद्दे तो थे ही। ये मुद्दे कांग्रेस के लिए इतने भारी पड़े कि दो जगह से चुनाव लड़ने वाले सीएम लाल थनहावला को दोनों सीटों से करारी हार मिली।

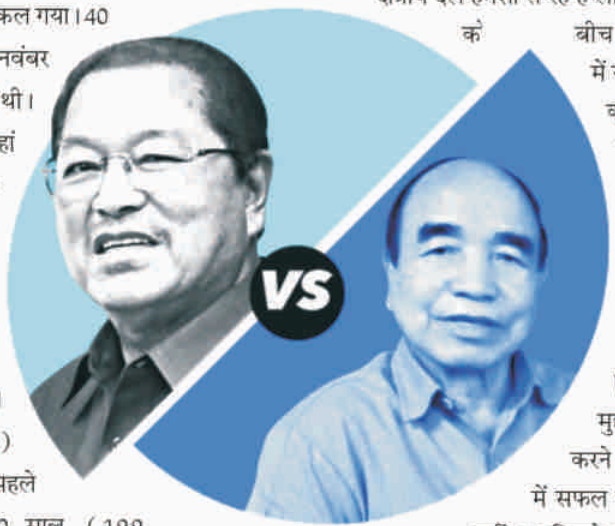

रोजगार और विकास से जुड़े अन्य परंपरागत मुद्दे तो थे ही। ये मुद्दे कांग्रेस के लिए इतने भारी पड़े कि दो जगह से चुनाव लड़ने वाले सीएम लाल थनहावला को दोनों सीटों से करारी हार मिली।

भाजपा ने पहली बार खोला खाता

उत्तर-पूर्वी भारत के आठ राज्यों में से 7 में भाजपा या भाजपा समर्थित गठबंधन की सरकारें पहले से हैं। मिजोरम में पार्टी 1998 से लगातार विधानसभा चुनाव लड़ रही है। हालांकि अब तक उसे यहां एक भी सीट जीतने में कामयाबी नहीं मिल पाई। इस बार उसने 35 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए जिनमें से तुईचॉन्ग सीट से बुद्धा धन चकमा ने एमएनएफ के रसिक मोहन चकमा को 11 हजार से ज्यादा वोटों से हराया है। पिछले विधानसभा चुनाव में 0.4 प्रतिशत वोट हासिल करने वाली भाजपा को इस चुनाव में आठ प्रतिशत वोट मिले। भाजपा ने यहां चुनाव की एक विशेष रणनीति अपनाई थी। पार्टी ने अपना सारा ध्यान उन सीटों पर लगाया जहां चकमा, ब्रू या अन्य गैर-मिजो जनजातियों की बहुलता है। मिजो आबादी और इन जनजातियों के बीच एक लंबे अरसे से तनाव की स्थिति रही है। यही वजह है कि यहां भाजपा के लिए जगह बनाने की गुंजाइश थी और उसका एकमात्र उम्मीदवार ऐसी ही सीट से चुनाव जीता है। एक और दिलचस्प बात यह है कि भाजपा ने उत्तर-पूर्वी राज्यों में अपनी ताकत बढ़ाने के लिए 2016 में क्षेत्रीय पार्टियों के साथ मिलकर उत्तर-पूर्वी लोकतांत्रिक गठबंधन (नीडा) बनाया था और एमएनएफ नीडा में शामिल है।

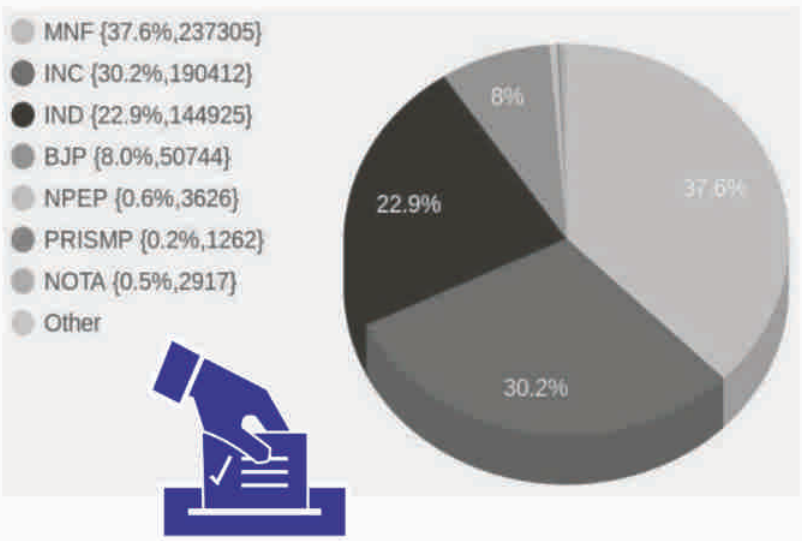

यह अलग बात है कि वह विधानसभा चुनाव भाजपा के साथ मिलकर नहीं लड़ी। हालांकि अब यह देखने वाली बात होगी कि भाजपा के एकमात्र विधायक को जोरामथांगा सरकार में कोई भूमिका मिलती है या नहीं। भाजपा ने अपने नारे के मुताबिक पूरे भारत को तो नहीं लेकिन 'उत्तर-पूर्वी भारत को तो कांग्रेस मुक्त' कर ही दिया।

- भावना जैन

Suyog Mattha

Shree Matta Fabrication Works

Automation System For Rolling Shutter, Gates, Doors and Barriers

17, B Surbhi Vihar I/s Keshav Nagar, Udaipur (Raj.)
Mobile : 9414158875, 9414168935
E-mail : smatthafabrications@gmail.com

सफल दाम्पत्य के लिए
गुण-मिलान ही काफी नहीं

– पंडित दयानन्द शास्त्री

विवाह सोलह संस्कारों में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हर स्त्री या पुरुष विवाह के समय अपना जीवन एक अनजान व्यक्ति के साथ सिर्फ यह सोचकर जोड़ता है कि मेरा हमसफर जीवन में सदैव मेरा साथ निभायेगा। मेरे हर सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझेगा और जिन्दगी में आने वाली सभी कठिनाइयों से मुकाबले में सहयोगी बनेगा। विवाह को जीवन का एक पड़ाव इसलिये कहा गया है क्योंकि विवाह से पूर्व व्यक्ति सिर्फ अपने लिये सोचता है, स्वयं के लिये जीता है किन्तु विवाह के पश्चात वह अपने परिवार और भावी संतती के लिये जीता है। पर आज विवाह का मतलब ही बदल गया है। रोज देखते हैं कि तनावग्रस्त वैवाहिक जीवन के फलस्वरूप हत्या और आत्महत्या जैसे अपराध हो रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार है, हमारी आधुनिक जीवन शैली और समाज को पथभ्रष्ट करती टी.वी. संस्कृति।

अधिकतर शादियां सिर्फ गुण-मिलान के आधार पर होती हैं। एक सफल विवाह के लिये गुण मिलान तो अत्यन्त आवश्यक है ही लेकिन सिर्फ यही काफी नहीं है। पूर्ण कुंडली मिलान उससे भी ज्यादा जरूरी है। प्राय: दिन या चौबीस घंटों में एक ही नक्षत्र होता है। मात्र एक या दो घंटे ही चौबीस घंटों में दूसरा नक्षत्र होता है और गुण-मिलान सिर्फ किस नक्षत्र के किस चरण में जातक का जन्म हुआ है, उसके आधार पर होता है। किन्तु उन चौबीस घंटों में बारह लग्नों की बारह लग्न कुण्डलियाँ बनती हैं। कहने का तात्पर्य यह कि उन चौबीस घंटों में जन्मे सभी जातकों की जन्म, नक्षत्र और जन्म राशि तो समान होगी किन्तु उन सभी की कुंडलियों में अन्तर होगा। किसी के लिये गुरु, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल कारक ग्रह होंगे तो किसी के लिये शुक्र, शनि या बुध तो कोई मांगलिक नहीं होगा। किसी कुण्डली में राजयोग तो किसी में दरिद्र योग होगा। किसी की कुण्डली में अल्पायु किसी में मध्यायु तो किसी की कुण्डली में दीर्घायु योग होगा। किसी कुण्डली में वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा होगा तो किसी की कुण्डली में बहुत खराब। किसी के द्वि-विवाह, त्रि-विवाह का योग होता है तो किसी के आजन्म विवाह का योग ही नहीं होता। कहने का तात्पर्य यह है कि उन चौबीस घंटों में जन्मे सभी जातकों को जन्म-नक्षत्र तो एक ही होगा किन्तु सभी की कुण्डलियाँ और उनका भाग्य अलग-अलग होगा। यहाँ पुन: ध्यान देने योग्य बात यह है कि गुण-मिलान सिर्फ जन्म नक्षत्रों के आधार पर ही होता है। ऐसे में यदि किन्हीं दो लड़के-लड़की के गुण मिलायेंगे और उनके गुण मिल भी गये किन्तु उनकी कुण्डलियों में कोई दोष है तो वह विवाह कतई सफल नहीं हो सकता। ऐसी भी कुण्डलियाँ होती हैं जिनके गुण तो 28-28, 30-30 मिल जाते हैं किन्तु उनका वैवाहिक जीवन अत्यन्त कष्टप्रद होकर तलाक तक की नौबत आ जाती है। सैकड़ों ऐसी भी कुण्डलियाँ देखी गई हैं जिनके मात्र 8-8, 10-10 गुण ही मिलते हैं फिर भी उनका जीवन सुखद व उन्नतिपूर्ण होता है।

गुण मिलान आवश्यक है किन्तु मात्र गुण मिलान पर ही पूर्ण भरोसा नहीं कर किसी योग्य ज्योतिषी से वर-कन्या की कुण्डलियाँ का मिलान करवाकर ही विवाह का निर्णय किया जाए। क्योंकि यह दोनों के सफल दाम्पत्य का सवाल है। जिसका समाधान आवश्यक है।

कांतिलाल जैन
(ब्रह्मचारी)

0294-2410444
09414155797 (M)

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ ज्योतिष कार्यालय

जैन साधनानुसार हस्तरेखा, तंत्र–मंत्र के विशेषज्ञ

नाकोड़ा रूप भवन

167, रोड नं. 11, अशोक नगर, माया मिष्ठान के पास, उदयपुर–313001 (राज.)

मिलने का समय : दोपहर 3 से सायं 7 बजे तक

नाकोड़ा रूप भवन

Ph: 022-24123857, 093220-90220 (M)

ब्लॉक नं. 10, केलकर बिल्डिंग,
नयागांव के.ए. हाउसिंग सोसायटी,
प्लॉट नं. 60–बी,एस.एम. जाधव मार्ग,
कृष्णा हॉल के सामने, दादर (ईस्ट) मुम्बई–14

रविवार चौकी एवं आरती

मिलने का समय :
दोपहर 3 से
सायं 7 बजे तक

नक्सली इलाके में कांग्रेस का अटैक

छत्तीसगढ़ में 15 साल बाद सत्ता में वापसी

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस के पास मुख्यमंत्री का चेहरा नहीं था। यहां बिना दूल्हे की बारात थी। नक्सल प्रभावित इस प्रदेश में मध्यप्रदेश की तर्ज पर ही कांग्रेस की 15 साल बाद सत्ता में वापसी हुई। कांग्रेस की किसानों का कर्ज माफ करने की घोषणा का असर 30 लाख किसान मतदाताओं में उभर कर जीत में तब्दील हो गया। जीत के बाद भूपेश बघेल को राज्य का सारथी बनाया गया। ये बघेल वही हैं जिनके नेतृत्व में कांग्रेस ने पिछले पांच सालों से भाजपा की रमन सरकार की नाक में दम कर रखा था। पूर्ण शराबबंदी, कर्ज माफी और राशन कार्ड जैसे मुद्दों पर अभियान छेड़कर सरकार की चौतरफा घेराबंदी करने वाले ये ही सूरमा थे। कांग्रेस के लिए किसानों की कर्जमाफी की घोषणा भी सत्ता की मजबूत सीढ़ी साबित हुई। यहां साहू, कुर्मी और आदिवासी समीकरण साधकर कांग्रेस ने जातीय संतुलन बैठाया। भाजपा के लिए न चावल काम आए न मोबाइल। जबकि भाजपा ने तो किसान बहुल राज्य में घोषणा पत्र में भूमि पुत्रों को ही दरकिनार कर दिया। रमन सिंह 2003 से ही राज्य के मुख्यमंत्री थे, ऐसे में लोगों में बदलाव की इच्छा भी कांग्रेस की मददगार बनी। राहुल गांधी ने छत्तीसगढ़ चुनाव के दौरान राफेल विमान सौदा और नोटबंदी जैसे मुद्दों को

नोटबंदी जैसे मुद्दों को लेकर केंद्र सरकार पर सीधे हमला बोला तो चिटफंड मुद्दे पर रमन सरकार की खिंचाई की। उन्होंने रैलियों में साफ कहा कि छत्तीसगढ़ में धन काबिज की कमी नहीं है लेकिन प्रदेश में 15 सालों से बीजेपी की सरकार और उसी की मिलीभगत से चिटफंड कंपनियां लोगों का पैसा लेकर भाग गईं। चुनाव के नतीजों से लगता है कि वह लोगों तक अपनी बात पहुंचाने में कामयाब रहे। मध्य प्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ का गठन साल 2000 में हुआ था और तब वहां कांग्रेस की सरकार बनी थी और इसके प्रथम मुख्यमंत्री अजीत जोगी थे। जोगी की गिनती कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में थी लेकिन कुछ अर्से बाद पार्टी से उनकी अनबन बढ़ती गई और अलग पार्टी बना ली। इस चुनाव में उनकी पार्टी जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़

में मायावती की बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के साथ मैदान में उतरी थी। माना जा रहा था कि कांग्रेस को इससे नुकसान हो सकता है, लेकिन जोगी और मायावती के उम्मीदवारों को जनता का वोट उस तरह से ट्रांसफर नहीं हुआ जिसकी उम्मीद थी। इसके अलावा कांग्रेस अजीत जोगी के खिलाफ हमलावर रही। उसने जोगी को 'धोखेबाज' और बीजेपी को उनकी 'बी टीम' की तरह पेश किया। कांग्रेस नक्सल प्रभावित जिलों में लोगों को यह समझाने में कामयाब रही कि नक्सली गतिविधियों में कमी महज कागजी है। हाल के दिनों में हुई कुछ नक्सली घटनाओं का हवाला देते हुए पार्टी ने लोगों को समझाने का प्रयास किया कि जमीनी स्तर पर स्थिति बिल्कुल अलग है। पार्टी लोगों को यह समझाने में भी कामयाब रही कि इन इलाकों में विकास के तमाम सरकारी दावे भी खोखले हैं। दूसरी ओर भाजपा की हार का आलम ये है कि आदिवासी बहुल सरगुजा और ब्रस्तर में तो पार्टी खाता तक नहीं खोल पाई। 24 सीटों पर महिलाओं की वोटिंग पुरुषों से ज्यादा रही उनमें भी 22 सीटों पर कांग्रेस जीती।

ये फैक्टर्स बने कामयाबी के तारणहार

1. **ओबीसी का साथ :** विधानसभा की 49 सामान्य सीटों में से ज्यादातर पर विशेष रूप से मैदानी क्षेत्रों में ओबीसी वर्ग का प्रभाव है। पिछले तीनों चुनावों में यह वर्ग भाजपा के साथ था, इस बार ये वर्ग कांग्रेस के साथ खड़ा हो गया। दरअसल, छत्तीसगढ़ में कांग्रेस-भाजपा के नेता ओबीसी वर्ग से ही हैं। प्रदेश में करीब 52 फीसदी ओबीसी हैं। इस बार कांग्रेस ने साहू और कुर्मी नेताओं को टिकट देकर इस वर्ग को महत्व दिया। नतीजतन ये वर्ग कांग्रेस के साथ खड़ा हुआ।
2. **एससी वर्ग में सेंधमारी :** प्रदेश में 12.81 फीसदी हिस्सा अनुसूचित जाति (एससी) का है। वैसे तो वर्ग के लिए 10 सीटें आरक्षित हैं, पर करीब 10 सामान्य सीटों पर भी इनका प्रभाव है। इनमें से 9 सीटें भाजपा के पास थीं लेकिन इस बार कांग्रेस को बढ़त मिली। सतनाम सेना के प्रमुख बालदास का कांग्रेस में शामिल होना पार्टी के लिए फायदेमंद रहा। कांग्रेस ने 6 सीटों पर आसानी से अंतर हासिल कर लिया। कांग्रेस को सराईपाली, डोंगरगढ़, अहिवारा, सारंगढ़, नवागढ़, आरंग और बिलाईगढ़ में जीत के लायक बढ़त मिल गई। सभी सीटों पर कांग्रेस के प्रत्याशियों के पास 6-10 हजार की लीड थी। वहीं भाजपा केवल मस्तूरी, मुंगेली और बसपा के खाते में पामगढ़ जाते दिखा।
3. **आदिवासी भी कांग्रेसी खेमे में :** राज्य की आबादी का 32 फीसदी हिस्सा एसटी वर्ग का है। इसमें करीब 42 जातियां शामिल हैं। एसटी वर्ग का सर्वाधिक प्रभाव बस्तर, सरगुजा व रायगढ़ क्षेत्र में है। अन्य क्षेत्रों में भी इनकी आबादी 10 प्रतिशत से कम नहीं है। राज्य की 29 सीटें इस वर्ग के लिए आरक्षित हैं, इनमें से सिर्फ 11 भाजपा के पास थीं। करीब 35 सीटों पर एसटी आबादी 50 प्रतिशत से अधिक है। इस बार कांग्रेस ने लीड बढ़ाई। आदिवासी रमन सरकार से नाराज थे। राहुल गांधी के आदिवासियों के अधिकारों का हनन न होने के आश्वासन बाद यह वर्ग भी कांग्रेस के पक्ष में खड़ा हो गया।
4. **किसान कर्जमाफी :** कांग्रेस का सबसे बड़ा चुनावी दांव किसान की कर्जमाफी और धान का समर्थन मूल्य 2500 रुपए करने तथा बिजली बिल आधा करने की घोषणा रही। सरकार द्वारा धान खरीदी शुरू करने के बाद भी किसानों ने वहां अब तक धान नहीं बेचा है। भाजपा के बैकफुट होने के कारण किसानों में उसके प्रति व्यापक गुस्सा भी था।
5. **नक्सल मामला :** कांग्रेस लगातार झीरम कांड को उठाती रही। हालांकि आंकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ में नक्सलियों में कमी आई है लेकिन कांग्रेस इसे महज खानापूर्ति ही बताती रही। नक्सल इलाकों में हो रही घटनाओं के बाद से बस्तर में लोग भाजपा में कमियां खोजने में लग गए थे। आमजन के साथ पुलिस प्रशासन भी नक्सलियों की यातना से पीछा नहीं छुड़ा पाए। इसको कांग्रेस ने मुख्य मुद्दा बनाकर जमकर भुनाया।
6. **शराबबंदी न करना :** भाजपा ने वादा करने के बाद भी शराबबंदी नहीं की। कॉरपोरेशन के जरिए शराब बेची। इसमें भी जमकर भ्रष्टाचार हुआ।

- संदीप गर्ग

कैसा रहेगा आपके लिए वर्ष 2019 ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

आपकी राशि का स्वामी मंगल है। शनि का भ्रमण रजत पाद से होने से सफलतादायक है। गुरु भी रजतपाद से शुभ है। व्यापार में लाभ मध्यम रहेगा। शनि के प्रभाव से थोड़ी बाधा आयेगी। बने हुए काम में अड़चन आ सकती है। मानसिक तनाव व शारीरिक अस्वस्थता से कारोबार पर भी असर रहेगा। यात्रा में सावधानी बरतें। शनि का प्रभाव शैक्षिक कार्य में बाधा पैदा करेगा। नौकरीपेशा लोग प्रमोशन की आशा कर सकते हैं। उदर विकार, नेत्र पीड़ा की परेशानी होगी। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता। शरीर में आलस्य व पीड़ा से मन में बेचैनी रहेगी, परिवार व सामाजिक कार्यों का दबाव भी स्वास्थ्य पर असर डाल सकते हैं। सम्भल कर रहें। व्यर्थ की चिन्ता छोड़ें। शनि व राहु शान्ति का उपाय करें। शनिवार को हनुमानजी का व्रत रखें, सुन्दरकाण्ड या हनुमान चालीसा का पाठ करें। गाय को हरा चारा खिलायें, दुर्गा माँ की आराधना भी लाभदायक रहेगी। चींटियों को आटा-बूरा मिलाकर शाम को खिलायें।

वृषभ

इस वर्ष राशि के आठवें भाव में शनि देव का आगमन लौहपाद से हो रहा है। यह आगमन दुख व कलहकारक है। लघु कल्याणी ढैया से हो रहा है। इस वर्ष आपको कार्यों में व्यवधान का सामना करना पड़ेगा। पारिवारिक सुख की कमी, स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। पारिवारिक सदस्य का विछोह, मानसिक परेशानी, भार्या को पीड़ा, नौकरी में स्थानान्तरण, उद्योग व्यापार में अनिश्चितता बनी रहेगी। अप्रैल, मई, जून में व्यापार उत्तम रहेगा। भूमि, भवन, वाहन के पूंजी निवेश कार्यों में लाभ मिलेगा। सन्तान व स्थानान्तरण से लाभ। माता-पिता से व्यापार में सहयोग। आय के नवीन साधन बनेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयास सफल होंगे। प्रतियोगी परीक्षा व साक्षात्कार में लाभ मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद संभव। धैर्यपूर्वक समाधान का प्रयत्न करें। स्वास्थ्य में नरमी, कार्य में अड़चन डाल सकती है। गुरुजनों के मार्गदर्शन से लाभ की प्राप्ति होगी। वर्ष उल्लास उमंगों से भरपूर है। स्वास्थ्य में गिरावट, कार्य में अड़चनें धैर्य व साहस से दूर होगी, धार्मिक कार्यों के प्रति लगाव बढ़ेगा। ससुराल पक्ष से लाभ। स्वास्थ्य में सुधार वर्ष के मध्य में होगा।

मिथुन

इस वर्ष आपकी राशि में सातवें भाव से ताम्रपाद से फल लक्ष्मी प्राप्तिदायक रहेगा। कोर्ट के फैसले अनुकूल रहेंगे। राहु का प्रभाव कम होगा। शरीर को रोग से मुक्ति। इस वर्ष वैवाहिक योग बन रहा है। आर्थिक सुधार से लाभ की प्राप्ति। वर्षान्त में दुर्घटना या चोट का भय। शनि शान्ति का उपाय करें। वर्ष के प्रारम्भ में शनि के प्रकोप से आय की अपेक्षा व्यय की अधिकता रहेगी। शरीर में आलस्य के कारण बनते कार्य में बाधा, व्यापार में अवरोध से धन आगमन में कमी। परिवार में मांगलिक कार्य धन व्यय अधिक स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। राजनेताओं के लिए यह वर्ष फलप्रद है। शैक्षिक क्षेत्र में नये मुकाम प्राप्त होंगे। किसी विशिष्टजन से भेंट, शिक्षा व प्रतियोगी परीक्षा में व्यय की अधिकता। मन को एकाग्रचित्त कर प्रतियोगिता में भाग लें। सफलता मिलेगी। वर्ष के मध्य में परिवारजनों, विशेषकर पिता अथवा भाई से तकरार होगी। पत्नी के स्वास्थ्य में गिरावट मन में बेचैनी पैदा करेगी। सन्तान पक्ष को सुख, शरीर में आलस्य व चिड़चिड़ेपन से कार्य में व्यवधान। परिवार में विशिष्ट आयोजन से मान-सम्मान बढ़ेगा। केतु शान्ति का उपाय करें। महामृत्युंजय मंत्र जाप, शिवजी की आराधना करें। चीटियों को आटा व बूरा डालें व गुरु शान्ति का उपाय करें।

मासिक राशिफल जनवरी 2019

मेष

माह के पूर्वार्द्ध में भाग्य साथ देगा, खर्चों की अधिकता एवं कार्य विशेष से भाग-दौड़ ज्यादा रहेगी। राजकीय लाभ प्राप्त हो सकता है, स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, संतान पक्ष से अच्छी खबर। इस माह जो योजना आप बनाएंगे, वह आगे लाभदायक सिद्ध होगी। साझेदारी का विघटन, दाम्पत्य जीवन सामान्य।

वृषभ

भौतिक सुखों में कमी का अनुभव, जीवन साथी के सहयोग से आय में वृद्धि, कार्य क्षेत्र में मनमुटाव रहेगा। अपने से कनिष्ठों में विश्वास जताये रखें। रचनात्मक कार्यों में सफलता, भाई-बहिनों से विवाद सम्भव।

मिथुन

पूर्व नियोजित कार्य 8 जनवरी से पूर्व कर लें, क्योंकि बाद में स्वास्थ्य सम्बंधी परेशानी संभव। साझेदारी से काम बनेंगे। बड़ों के परामर्श से ही योजना बनावें। पैतृक मामले और पेचीदा बन सकते हैं, विरोधी सक्रिय होंगे।

कर्क

अनुकूल स्थिति के लिए कुछ और दिन प्रतीक्षा करें। अटके कार्य भाग्य की प्रबलता से ही सफल होंगे, मनःस्थिति अन्तर्द्वन्द्व वाली रहेगी। साझेदारी में विवाद सम्भव, सन्तान की ओर से शुभ समाचार। जमीन सम्बन्धित मामले लाभप्रद व आय पक्ष सुदृढ़ रहेगा।

सिंह

भौतिक सुखों एवं ऐश्वर्य आदि वस्तुओं पर ज्यादा खर्च होगा, माह का पूर्वार्द्ध सकारात्मक परिणाम देगा। उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य एवं विरोधियों की परेशानी हो सकती है, पुराना सहयोगी या मित्र मदद करेगा, विवादित पैतृक एवं शासकीय मामले सुलझ सकते हैं, वरिष्ठजनों का आशीर्वाद लेकर काम करें, सफल रहेंगे।

कैसा रहेगा आपके लिए वर्ष 2019 ?

कर्क

इस वर्ष आपकी राशि में शनि छठे भाव से भ्रमण कर रहा है सुवर्ण पाद से फलत: वर्ष श्रम एवं संघर्ष का रहेगा। कार्यों में व्यवधान का सामना करना पड़ेगा। पारिवारिक सुख में कमी। चिन्ता रहेगी, चुनाव में हार की कसक, मांगलिक कार्य में व्यवधान। नवीन योजनाओं का आरम्भ व साझेदारी से व्यापार को लाभ वर्ष प्रारम्भ व अन्त में शनि का प्रभाव देखने को मिलेगा। व्यापार क्षेत्र में सतर्क रहें। नौकरी में पदोन्नति व व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि की अपेक्षाएं भी मन की बेचैनी व परेशानी में डाल सकती हैं। इस वर्ष शिक्षा क्षेत्र में सफलता के लिए आपको परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। प्रतियोगी परीक्षा में असफलता से मन खिन्न रहेगा। वर्ष के मध्य में गुरुजनों व इष्टजनों का मार्गदर्शन सफलता दिलायेगा। श्री हनुमान चालीसा एवं बजरंग बाण का पाठ करें, लाभ मिलेगा। वाहन चलाते समय व यात्रा में सावधानी बरतें। चोट व दुर्घटना का भय रहेगा। सन्तान पक्ष को पीड़ा व स्वयं का स्वास्थ्य परेशानी में डालेगा। ससुराल पक्ष से लाभ व परिवार में नवीन जन का आगमन। धार्मिक कार्य में मन लगेगा। गुरुवार के दिन केले के वृक्ष की पूजा व व्रत रखें। बुधवार को काले श्वान को दूध पिलाएं व माँ दुर्गा की आराधना करें।

सिंह

इस वर्ष आपकी राशि में शनि रजत पाद से भ्रमण कर आपको लाभ व कार्यों में सफलता दिलायेंगे। सामाजिक कार्य में मान सम्मान में वृद्धि, जमीन-जायदाद में वृद्धि व सुख की प्राप्ति होगी। राहू शान्ति का उपाय करें। जीवन सुखमय रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार से जीवन आनंदित होगा। व्यापार परिवर्तन से हानि संभव, भाइयों का सहयोग, रुके कार्य बनेंगे। उच्च अधिकारियों का सहयोग नौकरी व व्यापार में लाभ देगा। धार्मिक व सामाजिक कार्य में धन-व्यय में वृद्धि होगी। परिवारजन व गुरुजनों का सहयोग तरक्की के मार्ग में सहायक रहेगा। पढ़ाई में मन नहीं लगेगा। परन्तु वर्ष के मध्य जून-जुलाई में मन में उत्साह व लगन से शिक्षा व नौकरी में सफलता मिलेगी। व्यापार व सामाजिक कार्य में व्यस्तता के कारण स्वास्थ्य में गिरावट। सम्पत्ति विभाजन में विवाद से परिवार विघटित हो सकता है।

कन्या

इस वर्ष आपकी राशि में शनि चतुर्थ भाव से लौह पाद से भ्रमण कर रहा है। इससे वर्ष थोड़ा कष्टदायक ही रहेगा। कार्यों में अड़चन का सामना करना पड़ सकता है। मुकदमे में पराजय व व्यवसाय में बाधा आ सकती है। ससुराल पक्ष से सहायता, वर्ष के अन्त में स्थिति में सुधार करेगी। शनि/राहुल शान्ति का उपाय करें। संयम बरतें। शनि राहु की दृष्टि आपकी उन्नति में हानि पहुंचा कर कष्ट देगी। मित्रों के सहयोग से बिगड़ा काम बनेगा। राजनीतिक क्षेत्र में वर्ष के मध्य में उन्नति होगी। आमदनी के नवीन स्रोत खुलेंगे। शैक्षिक कार्य में वर्ष के मध्य में बाधा उत्पन्न होगी। नौकरी, शिक्षा व प्रतियोगिता में धन का व्यय मानसिक पीड़ा पहुंचाएगा। धैर्य रखें। गुरुजनों व भाइयों के सहयोग से सफलता आपके पक्ष में होगी। शनि की शान्ति से मन को चैन मिलेगा। बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। परिवार और स्वास्थ्य में सुधार से मन प्रसन्न रहेगा। इष्टजन का सहयोग प्रगति में सहायक सिद्ध होगा।

इस माह के प्रमुख त्योहार

1 जनवरी	मंगलवार	सफला एकादशी व्रत
5 जनवरी	शनिवार	देव एवं पितृ कार्य अमावस्या
12 जनवरी	शनिवार	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती
14 जनवरी	सोमवार	मकर संक्रान्ति(प्रयागराज में कुंभ पर्व आरंभ)
17 जनवरी	गुरुवार	पुत्रदा एकादशी व्रत
20 जनवरी	रविवार	पूर्णिमा व्रत
26 जनवरी	शनिवार	भारतीय गणतन्त्र दिवस
31 जनवरी	गुरुवार	षटतिला एकादशी व्रत

मासिक राशिफल जनवरी 2019

कन्या

माह का पूर्वार्द्ध संतोषप्रद, उत्तरार्द्ध में निराशा अनुभव करेंगे। कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता, सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान प्राप्त होगा। भाग्य साथ देगा। दाम्पत्य जीवन श्रेष्ठ।

तुला

स्थान परिवर्तन की प्रबल सम्भावना, भाई-बहिनों में सहयोग, पैतृक मामलों से लाभ, आय पक्ष सुदृढ़ रहेगा एवं आय के नये स्रोत प्राप्त होंगे। रक्त विकार सम्बंधी रोग संभव। सन्तान पक्ष की ओर से से चिन्ता समाप्त होगी।

वृश्चिक

धार्मिक कार्यों में रुचि के साथ खर्च बढ़ेगा। स्थाई सम्पत्ति में वृद्धि, आय पक्ष मजबूत, पुरुषार्थ पर अधिक ध्यान दें। परिवार के बड़े बुजुर्गों के सहयोग एवं आशीर्वाद से तरक्की के नये आयाम खुलेंगे।

धनु

माह के पूर्वार्द्ध में आत्मबल के प्रभाव से इच्छित कार्य कर सकते हैं। भाग्य भी साथ देगा, किसी भी योजना के लिए अग्रिम व्यवस्थाएँ होती रहेगी, भौतिक सुखों में वृद्धि सम्भव, व्यय में कमी, दाम्पत्य में निराशा और स्वास्थ्य में गिरावट सम्भव।

मकर

साझेदारी में विवाद एवं हानि सम्भव, जिसको आपने मन की बात बताई, वही अनुचित लाभ उठा सकता है। व्यय की अधिकता रहेगी, जमीन-जायदाद में निवेश लाभप्रद, शासकीय व न्यायिक मामले आपके लिए संतोषप्रद, दाम्पत्य जीवन में अकारण विवाद।

कुंभ

स्थाई आय के नये स्रोत बनेंगे, रचनात्मक कार्यों में सफलता, घर-परिवार में मांगलिक कार्य, भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता, दाम्पत्य जीवन आनंदपूर्ण, सन्तान पक्ष उत्तम, स्वास्थ्य मध्यम।

मीन

यह माह श्रेष्ठ फलदायी है। कार्य क्षेत्र में एक नयी जिम्मेदारी का निर्वहन करना होगा। अधीनस्थ सन्तुष्ट रहेंगे, भाग्य का पूर्ण सहयोग मिलेगा। स्थाई कार्यों में वृद्धि लेकिन सन्तान पक्ष से खिन्नता होगी।

कैसा रहेगा आपके लिए वर्ष 2019 ?

तुला

इस वर्ष आपकी राशि से तीसरे भाव में शनि। ताम्र पाद से भ्रमण कर रहे हैं। धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। राहु का प्रभाव आपको परेशानी देगा। समाज में मान वृद्धि, व्यापार में उन्नति, मकान वाहन में वृद्धि, शत्रु पक्ष कमजोर, सट्टा शेयर से लाभ मिलेगा। लेन-देन में सावधानी बरतें। राहु शान्ति का उपाय करें। वर्ष के प्रारम्भ में व्यापारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। मित्रों का सहयोग/उच्च शिक्षा में सफलता के लिये मेहनत अधिक करनी पड़ेगी। स्वजनों व गुरुजनों के आशीर्वाद व सहयोग से व्यापार में सफलता, मुश्किलों का समाधान मिलेगा। विद्यार्थी कुसंगति से बचकर अपना ध्यान शिक्षा में लगाएं, सफलता मिलेगी, नौकरी में पदोन्नति से मन में हर्ष, प्रतियोगिता में लाभ। जेब खर्चों में कमी कर शिक्षा क्षेत्र में खर्च से सफलता मिलेगी। इस वर्ष धार्मिक व सामाजिक कार्य अधिक होंगे, किन्तु स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। वायु उदर विकार से कष्ट। मास के मध्य में परिवार में शुभ समाचार की प्राप्ति। संभलकर कार्य करें तो लाभ मिलेगा। शनि की शांति और गुरु शांति का उपाय करें। गुरुवार को व्रत एवं केले के वृक्ष की पूजा करें। गाय को आटे की लोई खिलायें।

वृश्चिक

इस वर्ष राशि में द्वितीय भाव से शनिदेव भ्रमण कर पैरों पर उतरती साढ़ेसाती व रजत पाद से लाभ व सफलता प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगी। शनि शान्ति हेतु उपासना करें। शिव आराधना से भी लाभ मिलेगा। आय के साधन में बढ़ोतरी होगी। आर्थिक कारोबार में वृद्धि। क्रोध व वाणी पर संयम रखें। शत्रु पक्ष भी कार्यक्षेत्र में सहयोग के लिए मजबूर होंगे। लम्बी यात्रा से बचें। शैक्षिक कार्य में अड़चन परेशानी में डाल सकती है। स्थानान्तरण से नौकरी व शिक्षा पर भी असर पड़ेगा। भाइयों, गुरुजनों से सम्बन्ध में सुधार सफलता दिलाएंगे। स्वास्थ्य में गिरावट, व्यय की अधिकता से परेशानी, परिवारजनों से संयम से बात करें। वर्ष केमध्य में स्वास्थ्य में सुधार होगा। महामृत्युंजय मन्त्र का जाप करें। शिव आराधना करें। प्रतिदिन चींटियों को आटा-बूरा मिलाकर डालें। प्रत्येक शनिवार को तेल का दीपक जलावें। माँ दुर्गा की आराधना से भी लाभ होगा। सोमवार, मंगलवार, गुरुवार आपके लिए ज्यादा शुभ नहीं है।

धनु

इस मास राशि से प्रथम भाव में शनिदेव का भ्रमण का सुवर्णपाद से हो रहा है। हृदय पर मध्य की साढ़ेसाती से वर्ष संघर्षकारी ही रहेगा। व्यर्थ के आरोप से पीड़ा, बनते कार्य से भी बाधा आ सकती है। शनि यंत्र धारण करें तथा शनि व राहुल की शान्ति का उपाय करें। इस वर्ष आपको आमदनी में कमी व खर्चों में बढ़ोतरी से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यापार, सट्टा व शेयरों में भी हानि कष्ट पहुंचाएगी। लेन-देन में सावधानी एवं क्रोध पर संयम रखें। बनते कार्य में बाधा आ सकती है। इष्ट देव व पिता गुरुजनों की कृपा से कार्य सफल होंगे। नौकरी में परेशानी। व्यर्थ के विवादों व प्रेम-प्रसंग में न पड़े अन्यथा भविष्य अंधकारमय हो सकता है। विवेक से कार्य करेंगे तो शिक्षा व नौकरी के अच्छे अवसर आपके हाथ लग सकते हैं। किसी परिजन के स्वास्थ्य में गिरावट से पूरे परिवार में परेशानी होगी। पितृ शान्ति का उपाय लाभ देगा, दैवीय प्रकोप से भी स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। शनिवार के दिन जल व दूध में चना, काले तिल मिलाकर पीपल की जड़ में सूर्योदय से पहले सिंचन करें। सूर्यास्त पश्चात् सरसों के तेल का चौमुखी दीपक जलावें।

मकर

इस वर्ष में राशि से बारहवें भाव में शनि भ्रमण लौह पाद से सिर पर चढ़ती साढ़े साती से दुःख व कष्ट कलहकारी होगा। शुभ कर्म करने वाले व्यक्ति जो शराब-माँस का सेवन नहीं करते शनि देव उन पर कृपा करेंगे। कष्ट नहीं देंगे। इससे विपरीत आचरण वालों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। इस वर्ष आपको पैसों के लिए परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यर्थ के विवादों से बचें। अन्यथा धन व समय की बर्बादी होगी। व्यापार में लाभ की प्राप्ति, सामाजिक कार्य में धन का व्यय अधिक होगा। नकारात्मक विचार आपके लिए परेशानी पैदा कर सकते हैं। अतः धैर्य व सावधानी से हर कार्य को सम्पादित करें। इष्ट देव की आराधना से शिक्षा व कार्यक्षेत्र में तरक्की प्राप्त करेंगे। नौकरी में स्थानान्तरण का योग बन रहा है। आपको व पत्नी को शारीरिक कष्ट संभव। धार्मिक व सामाजिक कार्य की व्यस्तता से स्वास्थ्य में गिरावट। मित्रों का सहयोग लाभ देगा। परिवार में व्यर्थ का विवाद विघटन का कारण बन सकता है। मंगलवार को व्रत रखें। गाय को हरा चारा खिलाएं। गरीबों-भिखारियों को भोजन करायें व दान दें।

कुम्भ

इस वर्ष में शनिदेव का राशि से ग्यारहवें भाव में भ्रमण। सुवर्ण पाद से भ्रमण कर रहे हैं। इस वर्ष आपको व्यापार में श्रम अधिक लाभ कम मिलेगा। वर्ष के मध्य में संतोषप्रद लाभ की प्राप्ति होगी। शनि शान्ति का उपाय लाभदायक रहेगा। भूमि जायदाद के व्यवसाय में धन लाभ मिलेगा। शत्रु पक्ष आपके कार्य में व्यवधान पैदा करेंगे। व्यापार में सोच समझ कर फैसला लें तो लाभ अन्यथा हानि उठानी पड़ सकती है। मन में असन्तोष व भ्रम की स्थिति का त्याग कर अपना ध्यान कार्य क्षेत्र में लगाएं। इष्टमित्रों का सहयोग आपको नवीन ऊंचाई पर पहुंचा सकता है। नौकरी व व्यवसायिक शिक्षा में लाभ प्राप्त होगा। पत्नी से छोटी-छोटी बात पर विवाद उग्र रूप धारण कर पूरे परिवार को परेशानी में डाल सकता है। हालांकि माता-पिता व सन्तान से सुख मिलेगा। हनुमानजी, दुर्गा स्रोत का पाठ करें। जल में तिल, मीठा दूध मिला कर पीपल को चढ़ायें। सांय को कड़वें या मीठे तेल का चौमुंह दीपक जलावें।

मीन

इस वर्ष शनि देव राशि से दसवें भाव में ताम्रपद से भ्रमण कर धन की प्राप्ति करवा सकते हैं। परन्तु राहु केतु मार्ग में बाधा डाल सकते हैं, आय की अपेक्षा व्यय की अधिकता रहेगी। शान्ति उपाय कर लाभ लें। नवीन कार्य व व्यापार की योजना। धन लाभ में अड़चन शत्रु पीछे से वार कर व्यापार में अड़चन डालकर आपको आर्थिक, सामाजिक हानि पहुंचा सकता है। वर्ष के अन्त में धन लाभ व व्यापार में बढ़ोतरी। इस वर्ष अगस्त मास शिक्षा में लाभकारी सिद्ध होगा। कार्य में सफलता के लिए श्रम व व्यय अधिक करना पड़ सकता है। प्रतियोगिता में लाभ, मित्रों से व्यर्थ विवादों से दूर व व्यर्थ के प्रेम प्रसंग में न पड़े अन्यथा हानि उठानी पड़ेगी। स्त्री सुख वृद्धि से मन में प्रसन्नता बीमारी से आरोग्यता में लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता बरतें अन्यथा परेशानी हो सकती है। शनिवार को हनुमानजी की पूजा अवश्य करें।

100 चेंज मेकर्स बुक लॉन्च

उदयपुर। दैनिक भास्कर एवं एम स्क्वायर पब्लिकेशन के सहयोग से तैयार संभाग स्तरीय 100 चेंज मेकर्स बुक के पहले संस्करण की लॉन्चिंग पिछले दिनों हुई। अतिथियों ने बुक की रेप्लिका से पर्दा हटाकर इसे लॉन्च किया। समारोह की मुख्य अतिथि राजसमन्द विधायक किरण माहेश्वरी थी।

गोविन्द अग्रवाल व गुरप्रीत सिंह सोनी ने कहा कि समाज में ऐसे कई अनुभवी लोग हैं, जिन्हें हम जानते नहीं, लेकिन वे समाज के लिए उदाहरण हैं। ऐसे लोगों को इस बुक में स्थान देकर दूसरों को प्रेरित करने की पहल हुई है।

एमएस अली एंड ग्रुप ने गीतों के साथ राजस्थानी नृत्य प्रस्तुतियां दीं। एम स्क्वायर के महाप्रबंधक सतीश भारद्वाज आदि मौजूद थे।

पब्लिकेशन के सीईओ मुकेश माधवानी, दिनेश गोठवाल, तारिका भानुप्रताप धायभाई, दैनिक भास्कर के महाप्रबंधक सतीश भारद्वाज आदि मौजूद थे।

सैंपल फ्लैट्स का लोकार्पण

उदयपुर। देबारी के समीप सांवलिया धाम अफोर्डेबल हाउसिंग सोसायटी के सैंपल फ्लैट्स का लोकार्पण एवं प्रोजेक्ट का शुभारंभ 9 दिसम्बर को समाजसेवी बी एस कानावत ने किया। इस अवसर पर उद्यमी महेशचंद्र शर्मा, अशोक डंगायच, दलजीत सिंह एवं नरेन्द्र सिंह मलावत भी मौजूद थे। देबारी में सूखा नाका रोड पर प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री जन आवास योजना के प्रारूप 3 ए के तहत 375 फ्लैट्स बनाए जाएंगे।

हेल्दी किड्स प्रतियोगिता के विजेता पुरस्कृत

उदयपुर। नोबल इंटरनेशनल स्कूल, रानी रोड में हेल्दी किड्स प्रतियोगिता हुई। इसमें चयनित छात्रों को पुरस्कृत किया गया। स्कूल निदेशक के एम जिंदल ने बताया कि ग्रुप 2 से 3 वर्ष में आमतुल्ला हबीब, 3 से 4 वर्ष वर्ग में हितांश कुमावत प्रथम रहे।

टाटा मोटर्स की फोटो ओके प्लीज प्रतियोगिता

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने पिछले दिनों पास्को मोटर्स में टाटा ट्रक डाइवर्स के लिए फोटो ओके प्लीज प्रतियोगिता आयोजित की। इस अवसर पर टाटा मोटर्स लिमिटेड से राहुल सैनी, रोहित शर्मा, लोकेश नाथ चौहान, विशाल सूद, अनूप चौधरी और पास्को मोटर्स से अशोक खंडेलवाल, दिनेश कुमार सोनी, प्रवीण नेगी मौजूद थे। प्रतियोगिता का उद्देश्य ट्रक ड्राइवर्स को गर्व की अनुभूति कराने के साथ उन्हें बढ़ावा देना है।

कैंसर जागरूकता कार्यक्रम

उदयपुर। रोटरी क्लब मेवाड़ एवं द यूनिवर्सल स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में कैंसर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि रोटरी के पूर्व सचिव राममोहन राव थे। इस अवसर पर रोटरी मेवाड़ के पूर्व अध्यक्ष संदीप सिंघटवाड़िया ने कहा कि हमें जीवन में स्वस्थ रहना है तो उन व्यसनों से दूर रहना होगा, जो शरीर में रोग पैदा करते हैं। यूनिवर्सल स्कूल की प्रधानाध्यापिका फातिमा खिलौनावाला ने विशिष्ट अतिथि प्रेम मेनारिया, मुकेश गुरानी सहित आगन्तुकों का स्वागत किया। प्रीति शाह ने आभार ज्ञापित किया।

अम्बामाता स्कूल में 'जल मंदिर'

उदयपुर। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक स्कूल, अम्बामाता में लोकेश चौधरी की स्मृति में मनलोक जल मंदिर का निर्माण करवाया गया। यह आरओ वाटरप्यूरीफायर और वाटर कूलर का ऑटोमेटिक प्लांट है। इसका निर्माण मंजू चौधरी, आयुष और अनीश चौधरी ने करवाया। इससे स्कूली बच्चों को शुद्ध पेयजल मिल सकेगा।

जय भवानी का छठा आउटलेट

उदयपुर। जय भवानी वड़ा पाव के छठे आउटलेट का उद्घाटन सेक्टर 14 स्थित गोकुल टावर में हुआ। जेबी ग्रुप के (जय भवानी) के सेमल निवासी किशन राजपूत ने बताया कि गुजरात, मुम्बई के कांदिवली, मलाड, बंगलुरू, माउंट आबू, बिछीवाड़ा में आउटलेट खोलने के बाद अब उदयपुर में छठा आउटलेट खोला गया है। अशोका पैलेस के प्रबंध निदेशक अशोक माधवानी ने बताया कि यह शहर का छठां और देश का 116वां आउटलेट है।

मेहता अध्यक्ष, डॉ. चपलोत मुख्य सचिव

शांतिलाल मेहता

महावीर चपलोत

उदयपुर। जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन(जीतो) की उदयपुर चैप्टर की कार्यकारिणी गत दिनों गठित हुई। इसमें अध्यक्ष शांतिलाल मेहता, मुख्य सचिव सीए डॉ. महावीर चपलोत, वाइस चेयरमैन राजकुमार फत्तावत, किशोर चौकसी, राजकुमार सुराणा, पियूष मारू, राजकुमार बापना, देवेन्द्र कच्छारा, स्वास्तिक रांका, कोषाध्यक्ष पवन कोठारी, यंग विंग में प्रतीक नाहर, पार्थ कर्णावट, क्वीन की चेयरपर्सन सोनाली मारू, लेडीज विंग में मधु मेहता को नियुक्त किया गया।

राउंड टेबल इंडिया ने किया कक्षा कक्षों का उद्घाटन

उदयपुर। राउंड टेबल इंडिया ने कांकरवा स्थित राजकीय आदर्श उच्च प्राथमिक स्कूल में गत दिनों 3 कक्षा-कक्षों का उद्घाटन किया। टेबल के तिलक कटारिया ने बताया कि कक्षाकक्षों के अभाव में छात्रों की क्लास बरामदे में लग रही थी। प्रोजेक्ट के समन्वयक प्रतुल देवपुरा ने बताया कि कक्षा-कक्षों को कलात्मक रूप दिया गया है। नेशनल वाइस प्रेजिडेंट पीयूष डागा, एरिया चेयरमैन विनम्र जालान, नेशनल प्रोजेक्ट कन्वीनर हुसैन मुस्तफा, एरिया पोस्ट चेयरमैन अभिनव वाधवा, एरिया प्रोजेक्ट कन्वीनर अंकित मिश्रा, एरिया एच टी दीपक भंसाली, सौरभ जैन, परितोष मेहता, अजय आचार्य आदि मौजूद थे।

साहू राष्ट्रीय महासचिव

उदयपुर। राष्ट्रीय राजीव गांधी ब्रिगेड कांग्रेस के राष्ट्रीय संयोजक सलीम भारती ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी के आह्वान पर कांग्रेस को मजबूती देने को लेकर उदयपुर जिले के चांदमल साहू को राष्ट्रीय महासचिव पद पर नियुक्त किया है। पिछले कई वर्षों से राजस्थान प्रदेश राजीव गांधी ब्रिगेड कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर सेवाएं दे रहे थे।

सफलता में दिव्यांगता बाधा नहीं

उदयपुर। अर्थ डाइग्नोस्टिक की ओर से गत दिनों आयोजित 'कोशिश एक आशा' कार्यक्रम के दौरान तीन सौ से अधिक दिव्यांग व स्पेशली एबल्ड बच्चों ने हिस्सा लिया। डाइग्नोस्टिक सीईओ डॉ. अरविन्दर सिंह ने बताया कि कार्यक्रम में सरकारी स्वास्थ्य सेवा योजना एवं कॉर्पोरेट जगत के प्रतिनिधियों के बीच दिव्यांग बच्चों को मोटिवेशनल मंत्र के साथ जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम में बतौर अतिथि दिनेश खराड़ी, हंसराज चौधरी व अरावली हॉस्पिटल निदेशक डॉ. आनन्द गुप्ता ने विचार व्यक्त किए। डॉ. स्वीटी छाबड़ा व पूनम राठौड़ की शिरकत प्रमुखता से रही। विकलांग सेवा समिति, प्रयास तथा थियोसोफिकल सोसायटी ऑफ उदयपुर के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में विकलांग समिति के माधवलाल पालीवाल, अंध महाविद्यालय की सोनिया रावत व प्रयास की सुनीता भंडारी को सम्मानित किया गया।

नाकोड़ा भैरव मित्र मण्डल ने ली शपथ

उदयपुर। नवगठित नाकोड़ा भैरव मित्र मण्डल की नवीन कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह सम्पन्न हुआ। संरक्षक सुनील हिंगड़ ने मण्डल की कार्य योजना प्रस्तुत की। समारोह में संस्थापक सुधीर दशोरिया, सचिव श्यामसुन्दर चपलोत, अनिल बरड़िया, वर्धमान दोशी, हिम्मत मेहता, राकेश धनावत, सुनील जैन, नागेश जैन, हंसराज सिंयाल, सम्पतलाल लोढ़ा, विनोद परमार, महेन्द्र चोरड़िया, हस्तीमल लोढ़ा एवं किशनलाल कूकड़ा ने शपथ दिलाई।

बार एसोसिएशन की नई कार्यकारिणी

वैष्णव अध्यक्ष मेनारिया महासचिव

उदयपुर। बार एसोसिएशन की वर्ष 2019 की कार्यकारिणी के 16 दिसम्बर को हुए चुनाव में अध्यक्ष पद पर भरत वैष्णव जीते। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी जितेन्द्र जैन को दो सौ मत से हराया। महासचिव पद पर लोकेश मेनारिया विजयी हुए। चुनाव अधिकारी सुरेश द्विवेदी, कपिल टोडावत व राजेश उपाध्याय के निर्देशन में हुए चुनाव में कुल 2126 में से 1777 मतदाता अधिवक्ताओं ने मताधिकार का प्रयोग किया। वैष्णव को 980 व जैन को 780 मत मिले। उपाध्यक्ष पद पर गजेन्द्र नाहर ने संदीप श्रीमाली को 121 मतों से हराया। नाहर को 717 व श्रीमाली को 506 मत मिले। महासचिव पद पर लोकेश मेनारिया ने भूपेन्द्र सिंह चूंडावत को 125 मत से हराया। मेनारिया को 699 व चूंडावत को 574 मत मिले। सचिव पद पर ललित मेनारिया ने राजेश शर्मा को महज 9 मतों से शिकस्त दी। मेनारिया को 751 व शर्मा को 742 मत मिले। वित्त सचिव पद पर मनन शर्मा ने सैयद रिजवाना रिजवी को 293 मतों से हराया। शर्मा को 720, रिजवी को 427, दिनेश विश्नोई को 280 व रवि सोनी को 318 मत मिले। पुस्तकालय सचिव पद पर मनीष आमेटा सर्वाधिक 312 मत से विजय रहे। आमेटा ने कपिल चौधरी को 708 मत से हराया। आमेटा को 1020 व चौधरी को 708 मत मिले।

भानावत को सेठिया सम्मान

उदयपुर। विचार मंच संस्थान की ओर से कोलकाता में उदयपुर के कलाविद डॉ. महेन्द्र भानावत को कन्हैयालाल सेठिया पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. भानावत को पुरस्कार स्वरूप 51 हजार रुपए प्रदान किए। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी भी मौजूद थे। समारोह की अध्यक्षता पदनमचंद भूतोड़िया ने की।

95 रक्तवीरों का सम्मान

उदयपुर। अखिल भारतीय दिगम्बर जैन दसा नरसिंहपुरा संस्थान का शपथ ग्रहण, रक्तवीर सम्मान व कैलेण्डर विमोचन समारोह तेरापंथ भवन में हुआ। समारोह में 95 रक्तवीरों का सम्मान किया गया। परम संरक्षक कुन्तीलाल जैन ने बताया कि समारोह के मुख्य अतिथि महापौर चन्द्रसिंह कोठारी थे। समारोह में 25 से अधिक बार रक्तदान करने वाले हर्ष जैन, जतीन्द्र दुलावत, आशीष जैन, हितेष जैन तथा 13 महिलाओं समेत 95 रक्तवीरों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2019 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया। अतिथियों सहित अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद कोठारी, महामंत्री सुमतिचन्द्र जैन, विजय लुणदिया, इन्दरमल फान्दोत, मनीष भोपावत, प्रकाश अग्रवाल, रामचन्द्र अग्रवाल, नाथूलाल खलुड़िया, नेमीचन्द पचोरी, एस के जैन, अम्बालाल बोहरा, राजमल आवोत, भंवरलाल लुणदिया, निर्मल मालवीया, राजमल जैन, शांतिलाल गांगावत, पंकज गांगावत ने विमोचन किया। मुस्कान सिंघवी ने मंगलाचरण किया। प्रचार मंत्री चेतन मुसलिया ने बताया कि चन्दनमल छापिया, बांसवाड़ा से राजेश जैन, मांगीलाल हाथी भी मौजूद थे। संचालन राजेन्द्र सेन ने किया।

उत्कृष्टता व पर्यावरण के लिए हिन्दुस्तान जिंक को अवार्ड

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक को कॉर्पोरेट उत्कृष्टता, पर्यावरण प्रबंधन में उत्कृष्टता और सामाजिक उत्तरदायित्व हेतु सतत विकास के क्षेत्रों में दूरदर्शी दृष्टिकोण के लिए प्रतिष्ठित सीआईआई आईटीसी सस्टेनेबिलिटी अवार्ड्स 2018 से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार नई दिल्ली के प्रवासी भारतीय केन्द्र में आयोजित समारोह में नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ कांत ने प्रदान किए। हिन्दुस्तान जिंक की ओर से कार्पोरेट एक्सीलेंस आउटस्टेंडिंग एकम्पलीशमेंट अवार्ड चीफ एचएससी ऑफिसर आरएस आहुजा एवं एसोसिएट मैनेजर शमा जैन ने ग्रहण किया। सामाजिक उत्तरदायित्व में उत्कृष्टता के लिए कमेंडेशन फॉर सिग्निफिकेंट एचीवमेंट अवार्ड, एसोसिएट मैनेजर सीएसआर मोनिका जैन ने ग्रहण किया। दरीबा स्मेल्टिंग कॉम्पलेक्स की ओर से एक एक्सीलेंस इन एनवायरमेंट मैनेजमेंट का पुरस्कार हेड टेक्नोलॉजिकल सेल एए गहरवार एवं हेड मेकेनिकल संजीव राजु ने ग्रहण किया।

पृथक राज्य से ही मेवाड़ का विकास संभव

उदयपुर। मेवाड़ विकास मंच की बैठक पिछले दिनों महाकालेश्वर के रूद्राक्ष भवन में सम्पन्न हुई। मुख्य संरक्षक शांतिलाल नागौरी ने बताया कि बैठक में मेवाड़ के विकास को लेकर राजनैतिक उपेक्षा पर गहरा रोष प्रकट करते हुए वक्ताओं ने कहा कि ऐसी स्थिति में मेवाड़-वागड़ अंचल को मिलाकर पृथक राज्य के लिए संघर्ष ही एक मात्र विकल्प है। बैठक के मुख्य अतिथि समाजसेवी किरणमल सावनसुखा थे। अध्यक्षता मंच के संस्थापक-अध्यक्ष डॉ. के. एस. मोगरा ने की। विशिष्ट अतिथि 'प्रत्यूष' के सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी, महाकालेश्वर मन्दिर कमेटी के ट्रस्टी तेजसिंह सरूपरिया, उमा प्रतापसिंह व सोहन लाल कोठारी थे। चर्चा में डॉ. पुखराज सखलेचा, डॉ. ज्योति चौधरी, विरेन्द्र नागोरी, सत्यनारायण चौबीसा, डॉ. शिवनारायण व्यास, एडवोकेट विजय सिंह कच्छावा, सुभाष मेहता, डॉ. लोकेश आचार्य, नाहर सिंह मेहता व एम. सी. मेहता ने भाग लिया। संचालन डॉ. ओ. पी. महात्मा ने एवं धन्यवाद ज्ञापन सुनील बोर्दिया ने किया।

पाठकपीठ

जहरीली हवाओं से घुट रहा दम

दिसंबर माह की पत्रिका में संपादकीय बेहद सटीक था। तेजी से बढ़ते प्रदूषण से वातावरण में जहरीली हवा के कारण दिन-ब-दिन दम घुटता जा रहा है। इसका उपाय ढूंढना हितकर होगा, अन्यथा परिणाम भावी पीढ़ी के लिए कल्पना से भी ज्यादा भयावह होंगे।

- **पंकज अग्रवाल,** व्यवसायी

विश्लेषण सटीक हुआ साबित

पिछले माह की प्रत्यूष में लेख 'राह नहीं आसान मुकाबला हाईवोल्टेज' में राजस्थान में सत्ता बदलती परंपरा को लेकर जो विश्लेषण दिया गया वो सटीक साबित हुआ। राज्य में सत्ता के शिखर पर पहुंची कांग्रेस के पास इस बार परिस्थितियां विकट है।

- **राकेश माहेश्वरी,** व्यवसायी

सरदार को खुशी नहीं दुख मिला

नर्मदा के तट पर सरदार पटेल की विशालकाय प्रतिमा पर 2332 करोड़ खर्च किए गए। भारत में यह राशि गरीब, किसान और वंचितों के लिए खर्च की जा सकती थी। कोई बड़ी योजना भी उनके नाम से लाई जा सकती थी। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी देखकर सरदार जरूर दुखी हुए होंगे।

- **सीटी प्रेमनाथ,** समाजसेवी

त्योहार, पर्व से पहले जोड़ती है 'प्रत्यूष'

'प्रत्यूष' हमारी परिवारिक पत्रिका है। इसे पढ़कर हमें आने वाले त्योहार, पर्व और जयंती आदि का पूर्व अहसास होने लगता है। हमें त्योहारों और पर्वों के साथ महापुरुषों से जुड़े रहने का आभास इसे पढ़कर होता है।

- **भंवर महेन्द्र सिंह देवड़ा,** समाजसेवी

लक्ष्यराज को यंग अचीवर अवार्ड

उदयपुर। नई दिल्ली के होटल 'द ग्रैण्ड' में आयोजित समारोह में होटलों के क्षेत्र में विश्व स्तर पर कार्य करने वाले संस्थान बीडब्ल्यू बिजनेस वर्ल्ड द्वारा उदयपुर के होटेलियर लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को यंग अचीवर फॉर प्रिजरविंग हेरिटेज एवं प्रमोटिंग हॉस्पिटेलिटी अवार्ड से नवाजा गया। इसमें विश्व भर से चयनित होटलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मेवाड़ को 17 से अधिक होटलों में जीवंत विरासत के संरक्षण, संवर्द्धन एवं उत्थान के क्षेत्र में कार्य करने के लिए विशेष रूप से यह अवार्ड अनुराग बत्रा ने प्रदान किया।

ऋषभ जैन को नेशनल इंडियन अचीवर्स अवार्ड

उदयपुर। इंडियन अचीवर्स फोरम दिल्ली द्वारा आयोजित एक समारोह में लेकसिटी के युवा व्यवसायी ऋषभ जैन को बिजनेस एक्सीलेंस के तहत पर्यटन क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए नेशनल इण्डियन अचीवर्स अवार्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान भाजपा के वरिष्ठ नेता सुब्रमण्यम स्वामी, भाजपा सांसद एवं गीतकार मनोज तिवारी ने प्रदान किया। जैन ने बताया कि 1969 से इस क्षेत्र में कार्यरत कम्पनी ने पर्यटकों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने का कार्य किया है।

मिराज को बिजनेस एक्सीलेन्स अवाईस

उदयपुर। प्रमुख औद्योगिक समूह मिराज ग्रुप की अग्रणी इकाई मिराज रिटेलर्स को एबीपी बिजनेस एक्सीलेन्स अवार्ड्स 2018 के चौथे संस्करण में रिटेल बिजनेस में उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवार्ड के माध्यम से ग्रुप का उद्देश्य रिटेल व्यवसाय के क्षेत्र में विभिन्न विशेषज्ञता वाले व्यवसायों और व्यक्तियों की पहचान करना है। मुम्बई के ताज होटल में आयोजित एक भव्य समारोह में मिराज ग्रुप के वाईस चेयरमैन मंत्रराज पालीवाल ने यह अवार्ड्स ग्रहण किया इस दौरान उन्होंने कहा कि आपका विश्वास ही हमारी पहचान की तर्ज पर मिराज समूह ने आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है। इस दौरान ए बी पी ग्रुप के मुख्य प्रचालन अधिकारी अविनाश पांडे, डैन नेटवर्क समूह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विवेक भार्गव, मिराज रिटेल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सिलाश पॉल सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

रवीन्द्र मिस्टर व मेघा मिस फ्रेशर बनीं

उदयपुर। जेआर नागर विश्वविद्यालय(डीम्ड) राजस्थान विद्यापीठ के लॉ कॉलेज में पिछले दिनों हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान फ्रेशर्स पार्टी हुई। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत थे। अध्यक्षता प्रो. सुमन पामेचा ने की तथा विशिष्ट अतिथि डिप्टी रजिस्ट्रार रियाज हुसैन थे। प्रतिभागियों ने राजस्थानी एवं पंजाबी रिमिक्स एवं फ्यूजन पर प्रस्तुतियां दी। विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के बाद रवीन्द्रसिंह को मिस्टर एवं मेघा को मिस फ्रेशर चुना गया।

प्राचार्य प्रोत्साहन सम्मान

उदयपुर। ऐश्वर्या एजुकेशन संस्थान द्वारा गत दिनों प्रोत्साहन सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में चुने गये विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्राचार्यों को उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि ज्योतिबा फूले रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली के कुलपति प्रो. अनिल शुक्ला थे। उन्होंने सम्मानित प्राचार्यों को बधाई देते हुए कहा कि शिक्षा समाज के कल्याण के लिए अति आवश्यक है तथा यह सतत विकास की कुंजी है।

शोक समाचार

उदयपुर। श्री वरदीचन्द जी सालवी बेदला निवासी का 24 नवम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती भारती देवी, पुत्र ओम प्रकाश पुत्रियां सुंदर देवी, रेखा, इन्द्रा व गायत्री देवी तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री शांतिलाल जी टांक (नीलम रेस्टोरेन्ट) का देहावसान 16 दिसम्बर 2018 को हो गया। वे अपने पीछे पुत्र हर्षवर्धन टांक, पुत्री भारती सोलंकी व पौत्र, दोहित्र एवं दोहित्री सहित सम्पन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

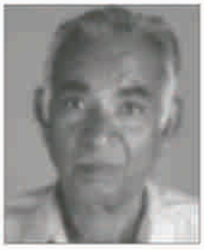

उदयपुर। श्री मनोहरलाल जी चपलोत मोही वाले का 7 दिसम्बर 18 को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र रणजीत चपलोत, पुत्रियां ललिता डांगी, कुसुम सांखला व भाई-भतीजों तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। परम कृष्ण भक्त एवं जयश्री कृष्णा ट्रेडर्स व श्रीराम वनस्पति भण्डार के मालिक **श्री प्रभुलाल जी साहू(नैणावा)** (70) का 25 नवम्बर, 2018 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी श्रीमती शांता देवी, पुत्र देवीलाल, हीरालाल, रामनारायण, पुत्री हेमलता पडियार सहित समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। पूर्व सांसद दीनबन्धु वर्मा की पत्नी **श्रीमती आशा वर्मा** का 7 दिसम्बर, 2018 को जयपुर में निधन हो गया। वे 76 वर्ष की थी। वे अपने पीछे एक पुत्र एवं एक पुत्री का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। वर्मा के निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, डॉ. सी. पी. जोशी, पूर्व सांसद रघुवीर मीणा, प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता पंकज कुमार शर्मा आदि ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। श्री कन्हैयालाल जी वरदार (कल्याणपुर) का 15 दिसम्बर, 2018 को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी, श्रीमती अमृता देवी, पुत्र हेमराज व शंकरलाल वरदार, पुत्रियां श्रीमती कंकू देवी व गंगादेवी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। जे. जे. श्रीनाथ भगवान एण्ड कम्पनी के संस्थापक एवं समाजसेवी **श्री धनराज जी मूंदड़ा** का 2 दिसम्बर 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती गंगादेवीजी, पुत्र रमेश, ओमप्रकाश व राकेश मूंदड़ा, पुत्री शशिकला लखोटिया तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर अनेक समाजसेवी संगठनों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व जिलाध्यक्ष श्री मदनलाल जी मूंदड़ा की धर्मपत्नी **श्रीमती रामकन्या देवीजी** का दिसम्बर 2018 को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति, पुत्र कृष्ण गोपाल(केजी) मूंदड़ा, सत्यप्रकाश व डॉ. कमल मूंदड़ा, पुत्रियां इन्दु बिड़ला, उर्मिला सोमानी व जयमाला जाजू सहित उनके सम्पन्न और समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं। वे धर्मपरायण एवं गोभक्त महिला थीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उदयपुर जिले में विकास में उनका बड़ा योगदान था। उनके निधन पर भाजपा नेता वसुंधरा राजे, गुलाबचंद कटारिया, किरण माहेश्वरी, रवीन्द्र श्रीमाली, कांग्रेस नेता डॉ. सी. पी. जोशी, डॉ. गिरिजा व्यास, गोपाल कृष्ण शर्मा, रघुवीर सिंह मीणा सहित अनेक नेताओं व सामाजिक संगठनों ने गहरा दु:ख प्रकट किया है।

उदयपुर। एमडीएस एज्यूकेशन सोसायटी के अध्यक्ष श्री धीरेन्द्र सिंह सचान के पिताश्री **विरेन्द्रपाल सिंह जी सचान** का 3 दिसम्बर, 2018 को कानपुर(उप्र) में देहावसान हो गया। उनके निधन पर विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षिक संगठनों ने गहरा शोक व्यक्त किया है। वे अपने पीछे समृद्ध एवं सम्पन्न सचान परिवार छोड़ गए हैं।

St. Anthony's Sr. Sec. School

Affiliated to CBSE, New Delhi

Wishing you all
a
Merry Christmas
&
A Happy Peaceful & Prosperous New Year 2019

478/479, Sector - 4, Hiran Magri, Udaipur
School Ext. Goverdhan Vilas, Udaipur

BDGH since 1980

38 Years of Quality care Gattani Hospital

बिलासी देवी
गट्टानी हॉस्पीटल

शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.) मो. 9414162750, 9414169339, 9214460062

Web site - www.pileshospitaludaipur.com, www.childvaccinationudaipur.com

पाइल्स (क्रायो द्वारा) फिशर, फिस्टूला चिकित्सा का एक मात्र विश्वसनीय केन्द्र

पाइल्स
(क्रायो द्वारा)
एक दिन में छुट्टी
20,000 सफल ऑपरेशन

आज ही जानें आपकी कब्ज़ की गंभीरता को–
GKC SCORE
तुरंत लॉगऑन करें–
www.pileshospitaludaipur.com
Scan to download our App

बच्चेदानी ऑपरेशन
(बिना टाँके / दूरबीन द्वारा)
रियायती दरों पर
सामान्य प्रसव एवं सिजेरियन

डॉ. मुकेश देवपुरा
एम.बी.बी.एस., डी.सी.एच.
मो. 94141-69339

नि:संतानता एवं स्त्री रोग चिकित्सा
शिशु चिकित्सा एवं टीकाकरण केन्द्र
पेट एवं गर्भाशय केंसर का आधुनिकतम् इलाज

डॉ. कल्पना देवपुरा
एम.बी.बी.एस., एम.एस.
मो. 94141-62750

सभी प्रकार के दूरबीन ऑपरेशन (हर्निया, पथरी)

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com

www.aadharproducts.in

ROLJACK ASIA LIMITED

Roljack®
Always No.1

CRUSHING & SCREENING PLANT

MOBILE CRUSHER

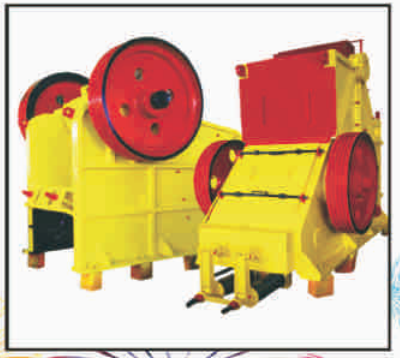

JAW CRUSHER

CONE CRUSHER

VERTICAL SHAFT IMPACTOR
(SAND MACHINE)

MULTI BLADE GANGSAW

DERRICK CRANE

CONCRETE BATCHING PLANT
(RMC)

ROLJACK ASIA LIMITED

Plot No. G1-21 - 27, Road No. 1, II-D Centre, RIICO Industrial Area, Kaladwas,
Udaipur- 313 001, (Rajasthan) INDIA, Tel .: +91 294-2650602, Fax.: +91 294 2483718

Cell : +91-73000 83000, 99290 55294, 98299 43010

Email : info@roljack.com, enquiry@roljack.com, sales@roljack.com, Web : www.roljackasia.com

SOLUTIONS FOR : STONE CRUSHING & SCREENING I STONE ENGINEERING I CONSTRUCTION

PRAN

विराट कम्प्रेसिव स्ट्रेन्थ

Ambuja Cement